नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 356, नई दिल्ली, मंगलवार 24 फरवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जिस इंसान के पास आशा होती है, वह कभी पराजित नहीं होता है!

03 शिव और शंकर में भेद

06 अंदर का आदमी : मनुष्य के वास्तविक स्वरूप की खोज

08 झारखंड के गिरिडीह में चुनाव के दौरान मारपीट ,फायरिंग,दो घायल

दिल्ली परिवहन विभाग मोटर वाहन नियम अधिनियम और माननीय सर्वोच्च न्यायालय के दिशा निर्देशों का कर रहा खुला उल्लंघन, फिर भी सरकार चुप

ट्रांसपोर्टर्स पर अत्याचार: केंद्र-राज्य सरकारें कानूनों की धज्जियां उड़ा रही हैं!

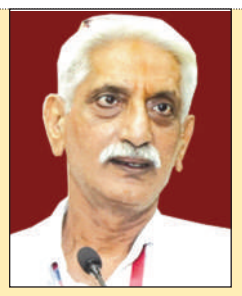

लेखक:- संजय कुमार बाठला
परिवहन नीति और सार्वजनिक हित मामलों पर विशेषज्ञ पत्रकार। पिछले एक दशक से सड़क सुरक्षा, स्वच्छ परिवहन और तकनीकी नवाचार से जुड़ी नीतियों पर गहन विश्लेषण और रिपोर्टिंग करते हैं।

नई दिल्ली। सार्वजनिक सवारी सेवा में शामिल वाहन मालिकों की लगातार उपेक्षा से दिल्ली-एनसीआर सहित हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान और पंजाब के ट्रांसपोर्टर्स व ड्राइवर आर्थिक व सुरक्षा संकट से जूझ रहे हैं।

1. बिना बीमा वाली बाइक टैक्सियां सवारी उठा रही हैं,

2. ऐप-बेस्ड टैक्सी कंपनियां ड्राइवरों का शोषण कर रही हैं,

3. पैनिक बटन जैसी सुविधाएं परिवहन विभाग की नीतियों के कारण फेल हैं।

1. केंद्र और सुप्रीम कोर्ट आफ इंडिया के दिशानिर्देशों की खुली अवहेलना - परिवहन विभाग के कारण बाइक टैक्सी और अवैध वाहनों का अवैध राज प्राइवेट नंबर वाली बाइक टैक्सियां दिल्ली-एनसीआर की हर गली में बिना इंश्योरेंस, बिना पुलिस वेरिफिकेशन के सवारी उठा रही हैं और महिलाओं की सुरक्षा खतरे में डाल रही हैं।

1. 1:- बिना पंजीकरण, बिना परमिट, बिना इंश्योरेंस बिना वाहन जांच प्रमाण पत्र, बिना वाहन प्रदूषण जांच प्रमाण पत्र और चालक लाइसेंस के सार्वजनिक सवारी सेवा देने वालो के कारण नियम और कानून से बंधे ऑटो-टैक्सी ड्राइवरों को भारी आर्थिक नुकसान हो रहा है। केंद्र और सुप्रीम कोर्ट आफ इंडिया के दिशानिर्देशों के बावजूद परिवहन विभाग चुप्पी साधे हैं।

2. ऐप टैक्सी: किराया नियंत्रण व सुरक्षा ऐप कंपनियां 10 वर्षों से किराया नहीं बढ़ा रही, बल्कि अपना कमीशन बढ़ा रही हैं —और सरकार कोई कार्यवाही करने को तैयार नहीं और ना ही सरकार न्यूनतम किराया तय कर रही है। ड्राइवरों की हत्या जैसे मामलों में भी ऐप कंपनियां जिम्मेदारी से मुकर जाती हैं। सरकार और परिवहन विभाग फिर भी मौन।

3. पैनिक बटन के नाम पर परिवहन विभाग की खुली लूट परिवहन विभागों ने महिला सुरक्षा का नाम लेकर अपना शक्ति का प्रयोग कर हर व्यावसायिक गतिविधियों में शामिल वाहनों में

पैनिक बटन लगवाया और अपना कार्य उसके कार्य पर जांच करने का डाटा सेंटर आज तक कार्यान्वयन में नहीं लाया जिस कारण वाहनों में यह तकनीकी रूप से फेल है— फिर भी इसके नाम पर विभाग द्वारा वाहन मालिकों से लुट। कंट्रोल रूम कनेक्टिविटी न होने से कोई फायदा नहीं।

4. AIS-153 पुरानी बसों पर AIS-153 बॉडी कोड थोपने से मालिकों पर अनावश्यक बोझ।

5. स्पीड लिमिट डिवाइस सड़क - ट्रैफिक वास्तविकता को नजरअंदाज कर चालकों को परेशान कर रहा है— टैक्सी एसोसिएशन लंबे समय से आल इंडिया एवम्टूरिस्ट परमिट वाहनों पर से इसे हटाने की मांग कर रही है।

6. EV थोपना कमर्शियल टैक्सी-बस पर EV दबाव, जबकि चार्जिंग व मेंटेनेंस मुद्दे अनसुलझे — दिल्ली में 75% कमी।

7. नया कानून 60-दिन में होम स्टेट वापसी 3 लाख टैक्स भरने के बावजूद ऑल इंडिया परमिट धारकों पर अतिरिक्त खर्च,

8. ई-चालान व राज्य-विशेष अत्याचार लाखों बोगस ई-चालान, 45 दिन में ब्लैकलिस्ट-जब्ती।

9. राजस्थान में लगेज कैरियर पर सीज, पर्यटक टूर प्रभावित।

10. यूपी, व्यावसायिक वाहनों से भी 15 साल का एकमुश्त टैक्स,

11. उत्तराखंड में चारधाम पर 6 महीने के स्थान पर 15-दिन सीमा अन्यथा दोबारा टैक्स।

परिवहन विभाग मोटर वाहन नियमों व संविधान का उल्लंघन कर ट्रांसपोर्टर्स को कुचल रहे हैं। केंद्र-राज्य सरकारें तत्काल सुधार करे।

"सुप्रीम कोर्ट आफ इंडिया का सुप्रीम फैसला"

केसों के फैसलो में विलम्ब मंजूर नहीं. - सीजेआई

लंबे समय से पेंडिंग होने के असर से बचने के लिए 40 साल पुराने एमसी मेहता केस बंद करेगा सुप्रीम कोर्ट

संजय कुमार बाठला

सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को एमसी मेहता केस बंद करने का प्रस्ताव दिया, जो 1984-85 से पेंडिंग हैं। हालांकि इन केस में उठाई गई शिकायतों को बहुत पहले ही सुलझा दिया गया था।

कोर्ट ने दिल्ली में एयर पॉल्यूशन और लैंड सीलिंग के साथ-साथ ताज ट्रेपेज़ियम ज़ोन के एनवायरनमेंट से जुड़े मामलों पर नज़र रखने के लिए इन मामलों को पेंडिंग रखा।

कोर्ट समय-समय पर इन मामलों में फाइल की गई अलग-अलग एप्लीकेशन पर सुनवाई करता रहा है, जो आज की शिकायतों से जुड़ी हैं, जो एमसी मेहता द्वारा चालीस साल पहले फाइल की गई ओरिजिनल पीआईएल में बताए गए असली कारणों से अलग हैं।

चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया (सीजेआई) सूर्यकांत ने कहा कि एमसी मेहता केस के पेंडिंग होने से यह गलत असर पड़ता है कि 1984 में फाइल किए गए केस अभी भी सुप्रीम कोर्ट में बिना फैसले के हैं।

बता दें, एमसी मेहता द्वारा फाइल किए गए तीन अलग-अलग मामले टॉप कोर्ट में पेंडिंग हैं। ये मोटे तौर पर दिल्ली-एनसीआर में एनवायरनमेंट और सीलिंग के मुद्दों और ताज ट्रेपेज़ियम ज़ोन में एनवायरनमेंट के मुद्दों से जुड़े हैं।

1984-1985 में फाइल की गई इन याचिकाओं पर समय-समय पर सुनवाई होती रही है, क्योंकि ओरिजिनल पिटीशन में नए अंतरिम एप्लीकेशन/अलग-अलग एप्लीकेशन फाइल किए गए।

हालात की बुराई करते हुए सीजेआई ने कहा,

*ष्कितने मामले - एमसी मेहता में,

*एमसी मेहता में? एमसी मेहता को एक दिन में कितनी बार [रिलीव] किया जाएगा?

* एमसी मेहता का एक मामला क्यों नहीं हो सकता?

जब आप पार्लियामेंट में पूछते हैं तो हमें बताना पड़ता है कि हमारे सामने कितने पुराने मामले पेंडिंग हैं। हर बार आप हमें शर्मिंदगी वाली स्थिति में डालते हैं कि 1985 का मामला पेंडिंग है। इस कोर्ट में क्या हो रहा है!? हम अलग-अलग एप्लीकेशन को एक साथ जोड़कर उनसे अलग-अलग क्यों नहीं निपट सकते? मैं इन 1985 के मामलों को यहां पेंडिंग नहीं होने दूंगा।ह्न

सीजेआई ने कहा कि नई शिकायतें एमसी मेहता मामले में दायर एप्लीकेशन में उठाने के बजाय अलग पिटीशन में लाई जा सकती हैं।

सीजेआई, जस्टिस जॉयमाल्या बागची और जस्टिस विपुल पंचोली की बेंच ने यह ऑर्डर इस तरह लिखा, ह्नऐसा लगता है कि कई मामले हैं, जो एमसी मेहता बनाम यूनियन ऑफ़ इंडिया के नाम से पेंडिंग दिखाए गए।

* एक WP(C) No.13381/1984 है, जिस पर दशकों पहले फैसला हो चुका था। अभी भी अलग-अलग एप्लीकेशन/इंटरिम एप्लीकेशन फाइल किए गए और उन्हें इस तरह से लिस्ट किया गया, जैसे कि 1984 की रिट पिटीशन अभी भी कोर्ट में पेंडिंग है।

* एक और मामला, जिसका नाम एमसी मेहता बनाम Uol, WP(C) No.4677/1985 है।

इस मामले में भी समय-समय पर कई IA फाइल किए गए और उस तय मामले को फिर से ज़िंदा और पेंडिंग दिखाया गया।

* एक तीसरा मामला WP (C) No.13029/1985 है।

इन मामलों को 3 अलग-अलग तारीखों पर लिस्ट करें। इनमें से हर मामले में फाइल किए गए सभी IA/MA को तय तारीख पर अलग से लिस्ट किया जाए।"

बेंच ने इन मामलों में पेश होने वाले सभी वकीलों से यह बताने को कहा कि इन मामलों को ह्नपुराने मामलों को फिर से शुरू किए बिना, जिन पर बहुत पहले फैसला हो चुका हैह्न कैसे दोबारा शुरू किया जाना चाहिए। आदेश में आगे कहा गया कि वकीलों द्वारा की जाने वाली इस कोशिश में उन मामलों की पहचान करने की भी कोशिश की जाएगी, जिन्हें असरदार तरीके से और आसानी से अधिकार क्षेत्र वाले हाई कोर्ट में भेजा जा सकता है।

सीजेआई ने इशारा किया कि इन मामलों पर मार्च के पहले हफ्ते में सुनवाई होगी।

उन्होंने कहा, 'हम इस तरह के डॉक्यूमेंट्स और एप्लीकेशन से तंग आ चुके हैं।'

Case Title: .. TA Versus UNION OF INDIA AND ORS., W.P.(C) No. 13381/1984

दिल्ली में लागू होगी 'राहवीर योजना', सड़क दुर्घटना पीड़ितों की मदद पर मिलेंगे 25 हजार और प्रशस्ति पत्र

दिल्ली सरकार ने केंद्र की 'राहवीर' योजना लागू करने का फैसला किया है। इसके तहत सड़क दुर्घटना पीड़ितों की मदद करने वाले नागरिकों को 25 हजार रुपये नकद और प्रशस्ति पत्र मिलेगा।

नईदिल्ली। दिल्ली सरकार ने केंद्र सरकार की 'राहवीर' योजना को दिल्ली में लागू करने का फैसला लिया है। जल्द ही योजना को लागू किया जा सकता है। योजना के तहत सड़क दुर्घटनाओं में गंभीर रूप से घायलों की मदद करने वाले नागरिकों को 25 हजार रुपये की नकद पुरस्कार राशि और प्रशस्ति पत्र दिया जाएगा। आप सरकार में यह योजना मात्र दो हजार रुपये की थी। साथ ही, कुछ समय से यह योजना बंद भी थी।

मानवता का परिचय दे सकें

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने यह जानकारी देते हुए कहा कि केंद्र सरकार ने इस मानवीय पहल को प्रोत्साहन देने के लिए आर्थिक पुरस्कार की व्यवस्था की है ताकि आम नागरिक बिना किसी भय के दुर्घटना पीड़ितों की सहायता कर सकें और मानवता का परिचय दे सकें।

लोगों को आगे आने के लिए प्रोत्साहित करेगी

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस योजना का उद्देश्य आम जनता को सड़क दुर्घटना के पीड़ितों को गोल्डन आवर के भीतर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के लिए प्रेरित करना है।

केंद्र सरकार के सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय का मानना है कि अगर ज्यादा लोग आगे आकर मदद करेंगे तो सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मृत्यु दर में कमी लाई जा सकती है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि अक्सर लोग कानूनी झंझट या पुलिस कार्रवाई के भय से मदद करने से बचते हैं, लेकिन यह योजना उस भय को दूर कर लोगों को आगे आने के लिए प्रोत्साहित करेगी।

तत्काल अस्पताल पहुंचाने का साहस करेंगे

उन्होंने कहा कि दिल्ली जैसे महानगर में प्रतिदिन हजारों वाहन सड़कों पर चलते हैं, गोल्डन आवर के भीतर चिकित्सा सहायता उपलब्ध होना जीवन और मृत्यु के बीच निर्णायक साबित हो सकता है। यह योजना कई परिवारों को असमय शोक से बचाने में सहायक हो सकती है। मदद करने वाले को प्रोत्साहन राशि और कानूनी संरक्षण मिलने से ज्यादा लोग दुर्घटना पीड़ितों को तत्काल अस्पताल पहुंचाने का साहस करेंगे, जिससे अनमोल जीवन बचाए जा सकेंगे।

संकटग्रस्त व्यक्ति की स्वेच्छा से सहायता

मुख्यमंत्री ने विश्वास जताया कि दिल्ली सरकार इस योजना को प्रभावी ढंग से लागू कर सड़क सुरक्षा और मानवीय संवेदनशीलता दोनों को मजबूत करेगी। इन नियमों के तहत ऐसे नागरिकों को कानूनी संरक्षण प्रदान किया गया है जो किसी घायल, असहाय या संकटग्रस्त व्यक्ति की स्वेच्छा से सहायता करते हैं।

गोल्डन ऑवर के भीतर अस्पताल पहुंचाने पर पुरस्कार के पात्र होंगे

मुख्यमंत्री ने कहा कि योजना के तहत कोई भी व्यक्ति, जिसने किसी गंभीर सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति को तत्काल सहायता दी हो और उसे गोल्डन आवर के भीतर अस्पताल या ट्रामा सेंटर पहुंचाया हो, वह पुरस्कार के लिए पात्र होगा।

ऐसे प्रत्येक मामले में राह-वीर को 25 हजार रुपये की नकद राशि प्रदान की जाएगी। यदि कोई व्यक्ति एक ही दुर्घटना में एक से अधिक पीड़ितों की जान बचाता है, तो भी उसे अधिकतम 25 हजार रुपये ही प्रदान किए जाएंगे।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार : "लव ट्रैप साइबर फ्रॉड" — पाकिस्तान से जुड़े तार, राजस्थान के हनुमानगढ़ में बड़ा खुलासा

पिंकी कुंडू

*** मामला**

- स्थानः हनुमानगढ़, राजस्थान

- आरोपीः हरदीप सिंह, शिक्षा – कक्षा 12 पास

- राशिः लगभग ₹3.26 करोड़ की साइबर ठगी

- शिकायतेंः 14 राज्यों से जुड़ीं 36 से अधिक शिकायतें दर्ज

*** घटनाक्रम**

- करीब दो साल पहले हरदीप का संपर्क पाकिस्तान की महिला राबिया से एक फ्रॉड कॉल के जरिए हुआ।

- बातचीत धीरे-धीरे व्यक्तिगत संबंध में बदल गई।

- राबिया और उसका परिवार पाकिस्तान में एक साइबर फ्रॉड कॉल सेंटर चलाते हैं।

- राबिया के कहने पर हरदीप ने भारत में साइबर ठगी शुरू की और स्थानीय मजदूरों के बैंक खाते किराए पर लेकर ठगी का पैसा क्रिप्टोकरेंसी (USDT) के जरिए पाकिस्तान भेजा।

*** ठगी का तरीका**

- लव ट्रैपः भावनात्मक संबंध बनाकर आरोपी को अपराध में शामिल करना।

- फर्जी निवेश योजनाएँः ऊँचे रिटर्न का लालच देकर पैसे जमा कराना।

- डिजिटल अरेस्ट स्कैमः पीड़ितों को डराकर पैसे ट्रांसफर करवाना।

- VoIP कॉल्स और SIM बॉक्सः सीमा पार से कॉल्स को स्थानीय नंबरों में बदलकर पहचान छिपाना।

*** पुलिस कार्रवाई**

- राजस्थान पुलिस ने हरदीप को गिरफ्तार किया।

- जांच में करोड़ों रुपये के संदिग्ध लेन-देन और 100 से अधिक बैंक खातों का उपयोग सामने आया।

- साइबर सेल और सुरक्षा एजेंसियाँ अब इस नेटवर्क के पाकिस्तान कनेक्शन और संभावित जासूसी पहलुओं की गहराई से जांच कर रही हैं।

*** नागरिकों के लिए सबक**

- सोशल मीडिया और कॉल्स पर बने रिश्तों से सावधान रहें।

- किसी भी निवेश या पैसे ट्रांसफर से पहले स्रोत की पुष्टि करें।

- संदिग्ध कॉल्स/मैसेज तुरंत 1930 (राष्ट्रीय साइबर हेल्पलाइन) या NCRP पोर्टल पर रिपोर्ट करें।

निष्कर्षः यह मामला दिखाता है कि कैसे लव ट्रैप का इस्तेमाल कर युवाओं को साइबर अपराध में धकेला जा सकता है। यह केवल व्यक्तिगत धोखाधड़ी नहीं बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा का मुद्दा भी है, क्योंकि इसमें सीमा पार से संचालित नेटवर्क और क्रिप्टोकरेंसी के जरिए धन का पाकिस्तान में ट्रांसफर शामिल है।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

छोटी इलायची सेहत के लिए लाभकारी है, लेकिन संतुलित मात्रा में

पिंकी कुंडू

मसालों की रानी कही जाने वाली छोटी इलायची भारतीय रसोई का एक अहम हिस्सा है। इसकी खुशबू और स्वाद न सिर्फ खाने का जायका बढ़ाते हैं, बल्कि यह सेहत के लिए भी बेहद फायदेमंद मानी जाती है।

आमतौर पर लोग इसका इस्तेमाल चाय और माउथ फ्रेशनर के रूप में करते हैं। लेकिन जैसा कि आप जानते हैं, जरूरत से ज्यादा किसी भी चीज़ का सेवन सेहत के लिए सही नहीं होता है। ऐसे में आज हम आपको जरूरत से ज्यादा छोटी इलायची खाने से होने वाले नुकसानों के बारे में बताने वाले हैं।

छोटी इलायची खाने के क्या है नुकसान ?

1. पेट से जुड़ी समस्या आयुर्वेद एक्सपर्ट्स के अनुसार, इलायची का सेवन पेट के लिए फायदेमंद होता है लेकिन, इसका सेवन जरूरत से ज्यादा करना एसिडिटी, गैस और पेट में जलन जैसी समस्याओं का कारण भी बन सकता है। कहते है इसलिए जिन लोगों का पेट से जुड़ी समस्या है तो उन्हें इसका सेवन सभलकर करना चाहिए।

2. गर्भवती महिलाओं एक्सपर्ट्स बताते है कि, इलायची का सेवन गर्भवती महिलाओं को भी कम मात्रा करना चाहिए। प्रेगनेंसी के दौरान जरूरत से ज्यादा इलायची का सेवन करना गर्भपात का कारण बन सकता है। इसलिए गर्भवती महिलाओं को इसका सेवन करने से पहले डॉक्टर की सलाह जरूर लेनी चाहिए।

3. एलर्जी की समस्या कुछ लोगों को इलायची खाने से एलर्जिक रिएक्शन भी हो सकता है, इसलिए जरूरत से ज्यादा इलायची का सेवन त्वचा पर लाल चकत्ते, खुजली, सूजन या सांस लेने में कठिनाई जैसी समस्याओं का कारण बन सकता है।

4. किडनी स्टोन के मरीज किडनी स्टोन के मरीज को भी छोटी इलायची का सेवन अल्प मात्रा में करना सही हो सकता है, लेकिन इसे जरूरत से ज्यादा खाने से किडनी स्टोन का खतरा बढ़ सकता है। एक्सपर्ट्स के अनुसार, इलायची में मौजूद कुछ यौगिक शरीर में कैल्शियम और ऑक्सलेट के संतुलन को बिगाड़ सकते हैं। जिन लोगों को पहले से ही पथरी की समस्या है, उन्हें इलायची का सेवन सीमित मात्रा में ही करना चाहिए।

5. लो ब्लड प्रेशर का खतरा इलायची ब्लड प्रेशर को कम करने में सहायक मानी जाती है। ऐसे में जिनका बीपी पहले से कम रहता है, उन्हें सावधानी बरतनी चाहिए।

6. दवाओं के साथ रिएक्शन कुछ दवाओं के साथ अधिक मात्रा में इलायची लेने से दुष्प्रभाव हो सकते हैं, खासकर ब्लड प्रेशर या खून पतला करने वाली दवाओं के साथ।

छोटी इलायची सेहत के लिए लाभकारी है, लेकिन संतुलित मात्रा में। रोजाना 1-2 इलायची पर्याप्त मानी जाती है।

भीगे बादाम, सेहत का अनोखा राज

पिंकी कुंडू

भीगे बादाम सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होते हैं।

1. बादाम को रात भर पानी में भिगोकर सुबह खाने से उसमें मौजूद पोषक तत्व शरीर को आसानी से मिल जाते हैं।

2. भीगे बादाम में विटामिन-E, ओमेगा फैटी एसिड और एंटीऑक्सीडेंट पाए जाते हैं जो दिमाग को तेज बनाने, याददाश्त बढ़ाने और एकाग्रता सुधारने में मदद करते हैं।

3. भीगे बादाम पाचन तंत्र को भी मजबूत बनाते हैं क्योंकि भिगोने से बादाम का छिलका नरम हो जाता है और यह आसानी से पच जाता है।

4. भीगे बादाम दिल के लिए भी अच्छे माने जाते हैं क्योंकि यह अच्छे कोलेस्ट्रॉल को बढ़ाकर खराब कोलेस्ट्रॉल को कम करने में मदद करते हैं। इसके अलावा

5. भीगे बादाम त्वचा को चमकदार और बालों को मजबूत बनाने में सहायक होते हैं।

6. भीगे बादाम खाने सुबह से शरीर को भरपूर ऊर्जा मिलती है और लंबे समय तक पेट भरा हुआ महसूस होता है, जिससे वजन नियंत्रित रखने में भी मदद मिलती है।

"शुगर कंट्रोल नहीं हो रही ? 'जामुन की गुठली' सोना है !

पिंकी कुंडू

वैज्ञानिक कारण:

1. जामुन की गुठली में 'जंबोलिन' और 'जंबोसाइन' नामक कंपाउंड होते हैं जो स्टार्च को शुगर में बदलने की प्रक्रिया को धीमा कर देते हैं

2. इससे खाने के बाद शुगर लेवल (भोजन के बाद अचानक बुखार) अचानक नहीं बढ़ता

3. यह इंसुलिन सेंसिटिविटी बढ़ाता है

आयुर्वेदिक कारण:

1. जामुन 'मधुमेह - हर' (मधुमेह नाशक) है

2. जामुन 'कषाय' (कसैला) रस प्रधान है जो कफ और मेद (Fat) को कम करता है

3. जामुन बार-बार पेशाब आने (बहुमूत्रता) की समस्या को भी ठीक करता है

फायदा:-

1. शुगर कंट्रोलः खाली पेट और खाने के बाद की शुगर कम होगी

2. एनर्जीः कमजोरी और थकान नहीं लगेगी

3. फ्री इलाजः गुठलियां इकट्ठी करो और चूर्ण बनाओ

फॉलो करने की विधिः1.

1. जामुन की गुठलियों को धोकर धूप में सुखा लें

2. पीसकर बारीक पाउडर बना लें

3. सुबह - शाम 1 चम्मच पानी के साथ लें

नुकसानः शुगर बहुत तेजी से कम हो सकती है, इसलिए अपनी शुगर चेक करते रहें, खाली पेट लेने से कभी-कभी कब्ज हो सकती है।

"भूख मर गई है और लिवर सुस्त है? 'गन्ने का रस' लिवर का सबसे अच्छा दोस्त है!

पिंकी कुंडू

वैज्ञानिक कारणः गन्ने का रस (Sugarcane Juice)

1. लिवर को मजबूती देता है और बिलीरुबिन (Bilirubin) लेवल को कंट्रोल करता है

2. यह शरीर को तुरंत ग्लूकोज देता है, जिससे लिवर का काम आसान हो जाता है और भूख खुलने लगती है

3. पीलिया (Jaundice) में यह सबसे अच्छी दवा है

आयुर्वेदिक कारणः

1. यह 'पित्त-शामक' और 'बल्य' है

2. यह शरीर की जलन को बुझाता है और मूत्रल (Diuretic) है — यानी गंदगी को पेशाब के रास्ते बाहर निकालता है

3. लिवर की गर्मी निकालने के लिए यह बेस्ट डिटॉक्स है।

फायदे

1. भूखः खाने का स्वाद वापस आएगा

2. ठंडकः पेट और हाथ-पैरों की जलन खत्म

3. लिवर डिटॉक्सः शराब या जंक फूड का असर कम होगा

फॉलो करने की विधिः

1. दोपहर में ताजा गन्ने का रस पिएं

2. इसमें थोड़ा नींबू और अदरक डलवाएं (ताकि कफ न बने)

नुकसान

* शुगर (Diabetes) के मरीज इसे न पिएं

* शाम को या रात को न पिएं (सर्दी हो सकती है)

* साफ-सफाई वाली जगह से ही पिएं

"बवासीर में खून और जलन? 'छाछ + जीरा' पेट की आग बुझा देगा!

पिंकी कुंडू

वैज्ञानिक कारणः

1. छाछ प्रोबायोटिक है जो पाचन को सुधारती है

2. जीरा और काला नमक पेट की गैस और एसिडिटी को खत्म करते हैं

3. यह मल को नरम करता है जिससे पास करते समय रगड़ और दर्द नहीं होता, और घाव जल्दी भरते हैं

आयुर्वेदिक कारणः आयुर्वेद में

1. छाछ को ₹₹पृथ्वी का अमृत₹₹ कहा गया है

2. छाछ 'तक्र' चिकित्सा है

3. छाछ 'ग्राही' (मल को बांधने वाला) और 'शीतल' है

4. छाछ बवासीर (अर्श) के लिए यह सबसे उत्तम औषधि है क्योंकि यह पेट की गर्मी (पित्त) शांत करती है

5. छाछ गःजलन शांतः

6. छाछ मिर्च जैसी जलन* तुरन्त आराम

7. छाछ खून बंदः मस्से सूखने लगेंगे

8. पेट साफः जोर नहीं लगाना पड़ेगा

फॉलो करने की विधिः

1. 1 गिलास ताजी छाछ (खट्टी न हो)

2. आधा चम्मच भुना जीरा पाउडर और चुटकी भर काला नमक मिलाएं

3. दोपहर के खाने के बाद पिएं

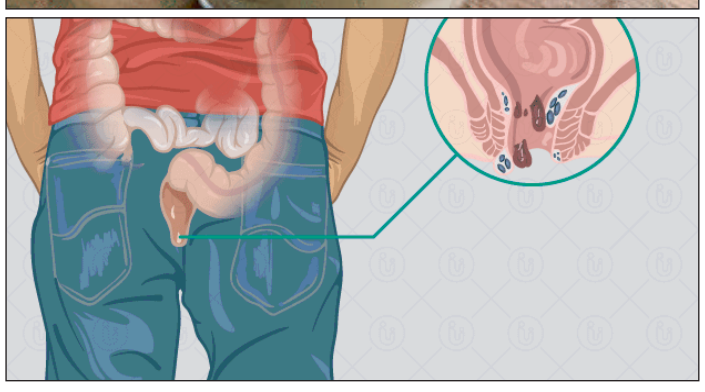

नुकसानः

1. रात को छाछ न पिएं (जोड़ों का दर्द हो सकता है)

2. अगर सर्दी-जुकाम है तो न पिएं

हल्दी के लाभ - हानि

पिंकी कुंडू

भारतीय मसालों में हल्दी का एक अलग ही महत्व है। यही कारण है कि आपको हर घर की रसोई में हल्दी ज़रूर मिलेगी। हल्दी खाने का स्वाद और रंग रूप तो बढ़ाती ही है साथ ही यह कई तरह के रोगों से भी बचाव करती है।

प्राचीन काल से ही हल्दी को जड़ी बूटी के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। आयुर्वेद में हल्दी को शरीर के लिए वरदान माना गया है इसमें मौजूद करक्यूमिन शरीर में सूजन कम करने और एंटीऑक्सीडेंट के रूप में काम करता है। लेकिन किसी भी चीज़ की तरह हल्दी का अत्यधिक सेवन नुकसान भी पहुंचा सकता है।

सामान्य मात्रा में हल्दी खाना सही और सुरक्षित है, लेकिन जरूरत से ज्यादा मात्रा या सप्लीमेंट्स के रूप में लेने पर समस्या हो सकती है।

ज्यादा हल्दी खाने से क्या नुकसान हो सकते है

1. किडनी स्टोन का खतरा डॉ. के अनुसार, ज्यादा हल्दी खाने से किडनी स्टोन का खतरा बढ़ सकता है। हल्दी में मौजूद करक्यूमिन शरीर में ऑक्सेलेट का स्तर बढ़ा सकता है। ऑक्सेलेट बढ़ने से किडनी स्टोन बनने का जोखिम बढ़ जाता है। जिन लोगों को पहले से पथरी की समस्या है, उन्हें ज्यादा हल्दी खाने से बचना चाहिए।

2. किडनी पर दबाव अत्यधिक मात्रा में सप्लीमेंट लेने से किडनी पर अतिरिक्त दबाव पड़ सकता है और टॉक्सिसिटी का खतरा बढ़ सकता है।

3. पेट से जुड़ी समस्याएं ज्यादा हल्दी खाने से पेट से जुड़ी समस्याएं भी हो सकती हैं। जैसे गैस, एसिडिटी या पेट में जलन जैसी दिक्कतें हो सकती हैं। अगर

आप पेट से जुड़ी समस्याओं से परेशान है तो हल्दी का सेवन कम मात्रा में ही करें।

4. कितनी मात्रा में खाना सुरक्षित है? रोजमर्रा के खाने में डाली जाने वाली हल्दी आमतौर पर सुरक्षित मानी जाती है।

बिना डॉक्टर की सलाह के हाई - डोज सप्लीमेंट लेना ठीक नहीं। हल्दी फायदेमंद है, लेकिन संतुलित मात्रा में। अगर किसी को किडनी स्टोन, किडनी रोग या अन्य गंभीर समस्या है, तो नियमित रूप से अधिक मात्रा लेने से पहले डॉक्टर से सलाह लेना जरूरी है।

"कान में असहनीय दर्द? 'लहसुन वाला तेल'

पिंकी कुंडू

लहसुन वाला तेल' कान का डॉक्टर है!

वैज्ञानिक कारणः

1. लहसुन में 'एलीसिन' और एंटी-बैक्टीरियल गुण होते हैं

2. सरसों तेल गर्माहट देता है

यह कॉम्बिनेशन कान के इन्फेक्शन को मारता है और सूजन कम करता है, जिससे दर्द में तुरंत राहत मिलती है

यह जमे हुए वैक्स को भी पिघला देता है

आयुर्वेदिक कारणः

1. कान का दर्द 'वात' और 'कफ' के प्रकोप से होता है

2. लहसुन और तेल दोनों 'वात-नाशक' और 'उष्ण' हैं

3. यह कर्ण- शूल का सबसे पुराना घरेलू उपचार है

फायदेः

1. दर्द बंदः रोता हुआ बच्चा भी चुप हो जाएगा

2. इन्फेक्शनः बैक्टीरियल इन्फेक्शन खत्म

3. खुजलीः कान की खुजली भी मिटेगी

फॉलो करने की विधिः

1. 1 चम्मच सरसों तेल में 1 लहसुन की कली काली होने तक पकाएं

2. तेल को गुनगुना (हल्का गर्म) होने दें

3. 2 बूंद कान में डालें

नुकसानः

चेतावनीः

1. अगर कान का पर्दा (Eardrum) फटा है या कान से मवाद (Pus) आ रहा है, तो तेल बिल्कुल न डालें, डॉक्टर को दिखाएं

2. तेल ज्यादा गर्म न हो

दूसरों के साथ गलत होते देखकर भी आंखें मूंद ले, उनकी गति भीष्म जैसी होती है

पिंकी कुंडू

जब रावण ने जटायु के दोनों पंख काट डाले तब काल जटायु को लेने आया और जैसे ही काल आया। गिद्धराज जटायु ने मौत को ललकार कहाः ₹सावधान ऐ काल ! आगे बढ़ने की कोशिश मत करना₹ मैं मृत्यु को स्वीकार तो करूँगा लेकिन तू मुझे तब तक नहीं छू सकता जब तक मैं सीता जी की सुधि प्रभु 'श्रीराम' को नहीं सुना देता !"

मौत उन्हें छू नहीं पा रही है प्रतीक्षा कर रही खड़ी हो कर और मौत तब तक खड़ी रही, जब तक जटायु ने प्राण नहीं त्यागे।

यही इच्छा मृत्यु का वरदान जटायु को मिला किन्तु महाभारत के भीष्म पितामह छह महीने तक बाणों की शय्या पर लेट करके मृत्यु का इंतजार करते रहे उनकी आँखों में आँसू हैं, रो रहे हैं और भगवान मन ही मन मुस्कुरा रहे थे !

कितना अलौकिक है यह दृश्य रामायण में जटायु भगवान की गोद रूपी शय्या पर लेटे हैं, प्रभु ₹ श्रीराम₹ रो रहे हैं और जटायु हँस रहे हैं !

महाभारत में भीष्म पितामह रो रहे हैं और भगवान ₹ श्रीकृष्ण₹ हँस रहे हैं।

कितनी भिन्नता थी दोनों की इच्छा मृत्यु में ?

* अंत समय में जटायु को प्रभु 'श्रीराम' की गोद की शय्या मिली ! लेकिन

* भीष्म पितामह को मरते समय बाण शय्या मिली !

जटायु अपने कर्म के बल पर अंत समय में भगवान श्री राम की ₹गोद रूपी शय्या₹ में प्राण त्याग रहे हैं और बाणों पर लेटे लेटे भीष्म पितामह रो रहे हैं !

ऐसा अंतर क्यों. ?

* ऐसा अंतर इसलिए कि भरे दरबार में भीष्म पितामह ने द्रौपदी की इज्जत को लुटते हुए देखा था पर विरोध नहीं कर पाये थे !

* दुःशासन को डाँट देते, दुर्योधन को ललकार देते, लेकिन द्रौपदी रोती रही, बिलखती रही, चीखती रही, चिल्लाती रही फिर भी भीष्म पितामह सिर झुकाये ही बैठे रहे, नारी के सम्मान की रक्षा नहीं कर पाये !

उसका परिणाम यह निकला कि इच्छा मृत्यु का वरदान पाने पर भी उन्हें बाणों की शय्या मिली और

जटायु ने नारी का सम्मान किया अपने प्राणों की आहुति दे दी ! तो उन्हें मरते समय भगवान 'श्रीराम' की गोद की शय्या मिली. !

जो दूसरों के साथ गलत होते देखकर भी आंखें मूंद लेते हैं, उनकी गति भीष्म जैसी होती है और जो अपना परिणाम जानते हुए भी औरों के लिए संघर्ष करते है, उसका माहात्म्य जटायु जैसा कीर्तिवान होता है !

इसीलिए कहते हैं कि 'कर भला तो हो भला ।

शिव और शंकर में भेद

पिंकी कुंडू

आप शिव के उपासक हैं या शंकर के ? चौंक गए ना ये सवाल सुनकरः- वैसे भी कौन मानेगा कि शिव और शंकर अलग अलग है. हमें तो बचपन से यही बताया गया है ना कि शिवशंकर एक ही है. यहाँ तक की दोनों नाम हम अक्सर साथ में ही लेते है।

अगर हम आपको ये कहे कि शिव और शंकर ना सिर्फ अलग अलग है बल्कि शंकर की उत्पति भी शिव से ही हुई है. शिव ही प्रारंभ है और शिव ही अंत है।

शिव और शंकर में सबसे बड़ा और समझने में आसान अंतर दोनों की प्रतिमा में है।

शंकर की प्रतिमा जहाँ पूर्ण आकार में होती है वही शिव की प्रतिमा लिंगम रूप में होती है या अंडाकार अथवा अंगूठे के आकार की होती है.

महादेव शंकर शंकर भी ब्रह्मा और विष्णु के तरह देव है और सूक्ष्म शरीरधारी है. ब्रम्हा और विष्णु की तरह शंकर भी सूक्ष्म लोक में रहते है. शंकर भी विष्णु और ब्रम्हा की तरह ही परमात्मा शिव की ही रचना है. शंकर को महादेव भी कहा जाता है परन्तु शंकर को परमात्मा नहीं कहा जाता क्योंकि शंकर का कार्य केवल संहार है. पालन एवं निर्माण शंकर का कर्तव्य नहीं है.

शिव शंकर से अलग शिव परमात्मा है. शिव का कोई शरीर नहीं कोई रूप नहीं है. शिव, शंकर, ब्रम्हा और विष्णु की तरह सूक्ष्मलोक में नहीं रहते. उनका निवास तो सूक्ष्म लोक से परे है. शिव ही ब्रम्हा विष्णु शंकर त्रिदेवों के रचियेता है. शिव ही विश्व का निर्माण, कल्याण और विनाश करते है जिसका माध्यम ब्रम्हा, विष्णु और महेश होते है।

देखा आपने की कैसे एक दुसरे से भिन्न है शिव और शंकर. अब आपको आसानी होगी ये जानने की कि किसकी उपासना करते है आप बात को आगे बढ़ाते हुए आपको एक और जानकारी देते है।

सबका जन्म दिन होता है क्या आपने कभी सोचा है कि शिव ही एक मात्र ऐसे है जिनके जन्मदिन को शिवरात्रि कहा जाता है. इसका भी एक कारण है रात्रि का मतलब शाब्दिक नहीं है यहाँ रात्रि का अर्थ कुछ और है।

यहाँ रात्रि से अभिप्राय ये है कि पाप, अन्याय, बुराइयाँ. जब काल के साथ साथ मनुष्य नीचता की और बढ़ता चला गया उस समय की तुलना रात्रि से की गयी है और उस गहरी रात्रि को शिव प्रकट होते है अर्थात जन्म लेते है।

शिव के जन्म की रात्रि के बाद रात्रि अर्थात अन्धकार का अंत हो जाता है और मनुष्यता एक बार फिर उन्नत हो जाती है।

ये था शिव और शंकर में अंतर और शिव जन्म को शिव रात्रि कहने का भेद।

सती और पार्वती के पति भगवान शंकर को सदाशिव के कारण शिव भी कहा जाता है। हम इन्हीं भगवान शंकर की बात करेंगे जिन्हें महादेव भी कहा गया है। भगवान शंकर के बारे में कुछ इस तरह की भ्रंतियां फैली हैं जो कि अपमानजनक है। वे लोग इसके दोषी हैं, जो जाने-अनजाने भगवान शिव का अपमान करते रहते हैं।

यदि आप भगवान शंकर के भक्त हैं तो आपको यह जान और सुन कर धक्का लगना चाहिये, क्योंकि भगवान शंकर हिन्दू धर्म का मूल तना है, रीढ़ है। रामचरित मानस में भगवान राम कहते हैं कि 'शिव का द्रोही मुझे स्वप्न में भी पसंद नहीं।'...

अपराधियों का साथी या उसे नजरअंदाज करने वाला भी अपराधी होता है। शिव के मंदिर में जाने और वहां पूजा, प्रार्थना करने के कुछ नियम होते है। यह सही है कि भगवान शंकर भोलेनाथ है। वे बड़े दयालु हैं, आपको क्षमा कर देंगे। लेकिन आपने उनके मंदिर में जाकर किसी भी तरह से नियम विरूद्ध कार्य किया या अपमान किया है तो आपको माता कालिका देख रही है। भगवान भैरव और शनिदेव भी देख रहे हैं। शैव पंथ पर चलाना या शिव की पूजा करना कठिन है। यह अग्निपथ है।

आओ हम आपको बताते हैं कि भगवान शिव के बारे में समाज में किस तरह की भ्रांतियां फैला रखी और उस भ्रांति को अभी तक बढ़ावा दिया जा रहा है।

क्या शिवलिंग का अर्थ शिव का शिश्न है? यह दुख की बात है कि बहुत से लोगों ने कालांतर में योनि और शिश्न की तरह शिवलिंग की आकृति को गढ़ा और वे उसके चित्र भी फेसबुक और व्हाट्सऐप पर पोस्ट करते रहते हैं। वे इसके लिए कुतर्क भी देते रहते हैं। उक्त सभी लोगों को मरने के बाद इसका जवाब देना होगा, क्योंकि शिव का अपमान करने वाला किसी भी परिस्थिति में बच नहीं सकता। शिव से ही सभी धर्म है और शिव से ही प्रलय भी।

दरअसल, शिवलिंग का अर्थ है भगवान शिव का आदि-अनादी स्वरूप। शून्य, आकाश, अनंत, ब्रह्मांड और निराकार परमपुरुष का प्रतीक होने से इसे लिंग कहा गया है। जिस तरह भगवान विष्णु का प्रतीक चिन्ह शालिग्राम है उसी तरह भगवान शंकर का प्रतीक चिन्ह शिवलिंग है। इस पींड की आकृति हमारी आत्मा की ज्योति की तरह होती है।

वायुपुराण के अनुसार प्रलयकाल में समस्त सृष्टि जिसमें लीन हो जाती है और पुनः सृष्टिकाल में जिससे प्रकट होती है उसे लिंग कहते हैं। इस प्रकार विश्व की संपूर्ण ऊर्जा ही लिंग की प्रतीक है। वस्तुतः यह संपूर्ण सृष्टि बिंदु-नाद स्वरूप है। बिंदु शक्ति है और नाद शिव। यही सबका आधार है। बिंदु एवं नाद अर्थात शक्ति और शिव का संयुक्त रूप ही तो शिवलिंग में अवस्थित है। बिंदु अर्थात ऊर्जा और नाद अर्थात ध्वनि। यही दो संपूर्ण ब्रह्मांड का आधार है। इसी कारण प्रतीक स्वरूप शिवलिंग की पूजा-अर्चना की जाती है।

स्कन्दपुराण में कहा है कि आकाश स्वयं लिंग है। धरती उसका पीठ या आधार है और सब अनंत शून्य से पैदा हो उसी में लय होने के कारण इसे लिंग कहा है। वातावरण सहित घूमती धरती या सारे अनंत ब्रह्मांड (ब्रह्मांड गतिमान है) का अक्स/धुरी ही लिंग है। पुराणों में शिवलिंग को कई अन्य नामों से भी संबोधित किया गया है जैसे- प्रकाश स्तंभ लिंग, अग्नि स्तंभ लिंग, ऊर्जा स्तंभ लिंग, ब्रह्मांडीय स्तंभ लिंग आदि। लेकिन बौद्धकाल में धर्म और धर्मग्रंथों के बिगाड़ के चलते लिंग को गलत अर्थों में लिया जाने लगा जो कि आज तक प्रचलन में है।

ब्रह्मांड का प्रतीक ज्योतिर्लिंग शिवलिंग का आकार-प्रकार ब्रह्मांड में घूम रही हमारी आकाशगंगा की तरह है। यह शिवलिंग हमारे ब्रह्मांड में घूम रहे पिंडों का प्रतीक है, कुछ लोग इसे यौनांगों के अर्थ में लेते हैं और उन लोगों ने शिव की इसी रूप में पूजा की और उनके बड़े-बड़े पंथ भी बन गए हैं। ये वे लोग हैं जिन्होंने धर्म को सही अर्थों में नहीं समझा और अपने स्वार्थ के अनुसार धर्म को अपने सांचे में ढाला।

शिवलिंग का अर्थ है भगवान शिव का आदि - अनादी स्वरूप। शून्य, आकाश, अनन्त, ब्रह्माण्ड और निराकार परमपुरुष का प्रतीक होने से इसे लिंग कहा गया है। स्कन्दपुराण में कहा है कि आकाश स्वयं लिंग है। धरती उसका पीठ या आधार है और सब अनन्त शून्य से पैदा हो उसी में लय होने के कारण इसे लिंग कहा है। वातावरण सहित घूमती धरती या सारे अनन्त ब्रह्माण्ड (ब्रह्माण्ड गतिमान है) का अक्स/धुरी ही लिंग है। पुराणों में शिवलिंग को कई अन्य नामों से भी संबोधित किया गया है जैसे- प्रकाश स्तंभ लिंग, अग्नि स्तंभ लिंग, उर्जा स्तंभ लिंग, ब्रह्माण्डीय स्तंभ लिंग आदि। लेकिन बौद्धकाल में धर्म और धर्मग्रंथों के बिगाड़ के चलते लिंग को गलत अर्थों में लिया जाने लगा जो कि आज तक प्रचलन में है।

शिव की दो काया है। एक वह, जो स्थूल रूप से व्यक्त किया जाए, दूसरी वह, जो सूक्ष्म रूपी अव्यक्त लिंग के रूप में जानी जाती है। शिव की सबसे ज्यादा पूजा लिंग रूपी पत्थर के रूप में ही की जाती है। लिंग शब्द को लेकर बहुत भ्रम होता है। संस्कृत में लिंग का अर्थ है चिह्न। इसी अर्थ में यह शिवलिंग के लिए इस्तेमाल होता है। शिवलिंग का अर्थ है : शिव यानी परमपुरुष का प्रकृति के साथ समन्वित-चिह्न।

ज्योतिर्लिंग : ज्योतिर्लिंग उत्पत्ति के संबंध में पुराणों में अनेक मान्यताएं प्रचलित हैं। वेदानुसार ज्योतिर्लिंग यानी 'व्यापक ब्रह्मात्मलिंग' जिसका अर्थ है 'व्यापक प्रकाश'। जो शिवलिंग के 12 खंड हैं। शिवपुराण के अनुसार ब्रह्म, माया, जीव, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी को ज्योतिर्लिंग या ज्योति पिंड कहा गया है।

क्या भांग और गांजा पीते हैं भगवान शंकर? इसका जवाब है नहीं। शिव पुराण सहित किसी भी ग्रंथ में ऐसा नहीं लिखा है कि भगवान शिव या शंकर भांग, गांजा आदि का सेवन करते थे। बहुत से लोगों ने भगवान शिव के ऐसे भी चित्र बना लिए हैं जिसमें वे चिलम पीते हुए नजर आते हैं। यह दोनों की कृत्य भगवान शंकर का अपमान करने जैसा है। यह भगवान शंकर की छवि खराब किए जाने की साजिश है।

यदि आपके घर, मंदिर या अन्य किसी भी स्थान पर भगवान शंकर का ऐसा चित्र या मूर्ति लगा है जिसमें वे चिलम पीते या भांग का सेवन करते हुए नजर आ रहे हैं तो उसे आप तुरंत ही हटा दें तो अच्छा है। यह भगवान शंकर का घोर अपमान है।

यह भी कितना दुखभरा है कि कई लोगों ने भगवान शंकर पर ऐसे गीत और गाने बनाएं हैं जिसमें उन्हें भांग का सेवन करने का उल्लेख किया गया है। कोई गीतकार या गायक यह जानने का प्रयास नहीं करता है कि इस बारे में सच क्या है। मैं जो गाना गा रहा हूं या गीत लिख रहा हूं उसका आधार क्या है?

यह तो छोड़िये बड़े बड़े पंडित भी शिव के मंदिरों में जब भांग का अभिषेक करते हैं तो फिर अन्य किसी पर दोष देने का कोई मतलब नहीं। ये सभी पंडित नर्क की आग में जलने वाले हैं। यह तो अब आम हो चला है कि शिवरात्रि या महाशिवरात्रि के दिन लोग भांग घोटकर पीते हैं। किसी को भांग पीने की मनाही नहीं हैं लेकिन शिव के नाम पर पीना उनका अपमान ही है।

प्रश्न : क्या भगवान शंकर को नहीं मालूम था कि गणेशजी पार्वती के पुत्र हैं? फिर उन्होंने अनजाने में उनकी गर्दन काट दी और फिर जब उन्हें मालूम पड़ा तो उन्होंने उस पर हाथी की गर्दन जोड़ दी? जब शिव यह नहीं जान सके कि यह मेरा पुत्र है तो फिर वह कैसे भगवान?

उत्तर : भगवान शिव के संपूर्ण चरित्र को पढ़ना जरूरी है। उनके जीवन को लीला क्यों कहा जाता है? लीला उसे कहते हैं जिसमें उन्हें सबकुछ मालूम रहता है फिर भी वे अनजान बनकर जीवन के इस खेल को सामान्य मानव की तरह खेलते हैं। लीला का अर्थ नाटक या कहानी नहीं। एक ऐसा घटनाक्रम जिसकी रचना स्वयं प्रभु ही करते हैं और फिर उसमें इन्वॉल्व होते हैं। वे अपने भविष्य के घटनाक्रमों को खुद ही संचालित करते हैं। दरअसल, भविष्य में होने वाली घटनाओं को अपने तरह से घटाने की कला ही लीला है। यदि भगवान शिव ऐसा नहीं करते तो आज गणेश प्रथम पूज्जनीय देव न होते और न उनकी गणना देवों में होती।

विशेष दार्शनिक क्षेत्रों में माना जाता है कि लीला ऐसी वृत्ति है जिसका आनन्द प्राप्ति के सिवा और कोई अभिप्राय नहीं। इसीलिए कहते हैं सृष्टि और प्रलय सब ईश्वर की लीला ही है। अवतार धारण करने पर इस लोक में आकर भगवान्जो कृत्य करते हैं, उन सब की गिनती भी लीलाओं में ही होती है। लोक व्यवहार में वे सब कृत्य जो भगवान्के किसी अवतार के कार्यों के अनुकरण पर अभिनय या नाटक के रूप में लोगों को दिखाए जाते हैं।

भगवान राम को सभी कुछ मालूम था कि क्या घटनाक्रम होने वाला है। उन्हें मालूम था कि मृग के रूप में आया यह राक्षस कौन है। लेकिन सीता ने उनकी नहीं मानी और तब उन्होंने लक्ष्मण को सीता के पहरे के लिए छोड़ कर मृग के पीछे चले गए।

इसी तरह भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि तू किसी को नहीं मार रहा है। यह सब पहले से ही मेरे द्वारा मारे जा चुके हैं। अब तो यह बस खेल है। बर्बरिक से जब महाभारत का वर्णन पूछा गया तो उसने कहा कि मुझे तो दोनों ही ओर से श्रीकृष्ण ही यौद्धाओं को मारते हुए नजर आ रहे थे। इसी तरह कहा जाता है क सहदेव को महाभारत का परिणाम मालूम था लेकिन श्रीकृष्ण ने उन्हें चुप रहने के लिए कहा था। यही तो लीला है।

क्या शिव-पार्वती हैं 'आदम और ईव'? भगवान शंकर को आदिदेव भी कहा जाता है। शंकर के दो पुत्र थे, गणेश और कार्तिकेय। जैसा कि कहा गया है कि आदम के दो पुत्र कैन और हाबिल थे। कैन बुरा और हाबिल अच्छा। पार्वती ही क्या ईव है। कुछ विद्वानों का मानना है कि स्वायंभुव मनु और शतरूपा ही आदम और हव्वा थे।

शिव का पहला विवाह राजा दक्ष की पुत्री सती से हुआ था जो आग में कूद कर भस्म हो गई थी। उनका दूसरा विवाह पर्वतराज हिमालय की पुत्री उमा से हुआ जिन्हें पार्वती कहा जाता है। पार्वती से उनको एक पुत्र मिला।

प्रमुख रूप से शिव के दो पुत्र थे, गणेश और कार्तिकेय। गणेशजी की उत्पत्ति कैसे हुई यह सभी जानते हैं। यह शिव और पर्वती के मिलन से नहीं जन्में। शिव के दूसरे पुत्र कार्तिकेय का जन्म शिव - पार्वती मिलन से हुआ। शिव का एक तीसरा पुत्र था जिसका नाम विद्युत्केश था। विद्युत्केश अनाथ बालक था जिसे शिव और पार्वती ने पालपोस कर बड़ा किया था। इसका नाम उन्होंने सुकेश रखा था। शिवजी का एक चौथा पुत्र था जिसका नाम था जलंधर। भगवान शिव ने अपना तेज समुद्र में फेंक दिया इससे जलंधर उत्पन्न हुआ। जलंधर शिव का सबसे बड़ा दुश्मन बना। इस तरह शिव के और भी कई पुत्र थे। जैसे अंधक, सास्तव, भूमा और खुजा। शिव की कथा और आदम की कथा में जरा भी मेल नहीं है।

शिव और पार्वती को आदम और हव्वा सिद्ध करने वाले मानते हैं कि ईडन गार्डन श्रीलंका में था। श्रीलंका आज जैसा द्वीप नजर आता है यह पहले ऐसा नहीं था। यह इंडोनेशिया, जावा, सुमात्रा और भारत से जुड़ा हुआ था। वे कहते हैं कि शिव और पार्वती भी कैलाश पर्वत से श्रीलंका रहने चले गए थे जबकि कुबेर ने उन्हें सोने की लंका बनवाकर दी थी। हजरत आदम जब आसमान की जन्नत (ईडन उद्यान) से निकाले गए तो सबसे पहले 'हिंदुस्तान की जमीं' पर ही उतारे गए, जहां उन्होंने सबसे पहले कदम रखे उसे आदम चोटी कहते हैं। माना जाता है कि ह. आदम अलै. का 'तनूर' हिंद में था। माना जाता है कि कश्मीर ही उस दौर का स्वर्ग (जन्नत) था। वहां आज भी सेबफल की खेती होती है।

शोध से बता चला कि सेब फल को मनुष्य ने 8 हजार वर्ष पहले ही खाना शुरू किया था। इससे पहले मनुष्य सेबफल के बारे में जानता तक नहीं था। माना जाता है कि सेबफल की उत्पत्ति मध्य एशिया के देश कजाखिस्ता के जंगलों में हुई थी और वहीं से सेब बाकी की दुनिया में पहुंचे।

प्रश्न : क्या भगवान शिव ही शंकर, महेष, रुद्र, महाकाल, भैरव आदि हैं?

उत्तर पहली बात को यह कि हिन्दू धर्म का संबंध वेदों से है पुराणों से नहीं। त्रिदेवों में से एक महेष को ही भगवान शिव या शंकर भी कहा जाता है। वेदों में रुद्रों का जिक्र है। उक्त सभी की कहानियों को पुराणों में विस्तार मिला और सभी को एक ही शिव से जोड़ देने से भ्रांतियों का भी विस्तार हुआ।

औघड़ या तंत्रिकों के मत में जो शिव या शंकर का वर्णन किया गया है वह दरअसल, शिव के भैरव रूप का वर्णन है। यह भी हो सकता है कि यह उनके मन की व्याख्या हो या यह कि वे तंत्र के घोर मार्ग को अपनाने के लिए शिव की आड़ लेते हों। उक्त मत को रामचरित मानस में कोल मत का कहा गया है जो कि वेद विरुद्ध है। वर्तमान में कुछ लोग साई बाबा को ही शिव का अवतार घोषित करने में लगे हैं तो अब क्या करें ऐसे लोगों का। इसी तरह कालांतर में ऐसे कई लोग, संत या ऋषि हुए हैं जिनको शिव से जोड़ कर देखा गया और उनकी कथाएं लिखकर कर समाज में भ्रम फैलाया गया।

माना जाता है कि प्रत्येक काल में अलग - अलग रुद्र हुए हैं। इस तरह 12 रुद्र हुए। शिव निकारार सत्य है तो शंकर साकार। पुराणों में ऐसी कई बातों का उल्लेख है जिसको शंकर से जोड़ दिया गया है। जैसे भैरव पीते हैं तो इसका यह मतलब नहीं कि शंकर भी पीते हैं।

शिव, शंकर, महादेव : शिव का नाम शंकर के साथ जोड़ा जाता है। लोग कहते हैं – शिव, शंकर, भोलेनाथ। इस तरह अनजाने ही कई लोग शिव और शंकर को एक ही सत्ता के दो नाम बताते हैं। असल में, दोनों की प्रतिमाएं अलग - अलग आकृति की हैं। शंकर को हमेशा तपस्वी रूप में दिखाया जाता है। कई जगह तो शंकर को शिवलिंग का ध्यान करते हुए दिखाया गया है।

शिव ने सृष्टि की स्थापना, पालना और विलय के लिए क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु और महेश नामक तीन सूक्ष्म देवताओं की रचना की। इस तरह शिव ब्रह्मांड के रचयिता हुए और शंकर उनकी एक रचना। भगवान शिव को इसीलिए महादेव भी कहा जाता है। इसके अलावा शिव को 108 दूसरे नामों से भी जाना और पूजा जाता है।

12 रुद्र : पहले महाकाल, दूसरे तारा, तीसरे बाल भुवनेश, चौथे षोडश श्रीविद्येश, पांचवें भैरव, छठें छिन्नमस्तक, सातवें धूमवान, आठवें बगलामुख, नौवें मातंग, दसवें कमल। अन्य जगह पर रुद्रों के नामः- कपाली, पिंगल, भीम, विरुपाक्ष, विलोहित, शास्ता, अजपाद, आपिर्बुध्य, शम्भू, चण्ड तथा भव का उल्लेख मिलता है।

अन्य रुद्र या शंकर के अंशावतार- इन अवतारों के अतिरिक्त शिव के दुर्वासा, हनुमान, महेश, वृषभ, पिप्पलाद, वैश्यानाथ, द्विजेश्वर, हंसरूप, अवधूतेश्वर, भिक्षुवर्य, सुरेश्वर, ब्रह्मचारी, सुनटनतर्क, द्विज, अश्वत्थामा, किरात और नतेश्वर आदि अवतारों का उल्लेख भी 'शिव पुराण' में हुआ है। हनुमान ग्यारहवें रुद्रावतार माने जाते हैं।

भैरव : भैरव भी कई हुए हैं जिसमें से काल भैरव और बटुक भैरव दो प्रमुख हैं। माना जाता है कि महेष (नंदी) और महाकाल भगवान शंकर के द्वारपाल हैं। रुद्र देवता शिव की पंचायत के सदस्य हैं। वैदिक काल के रुद्र और उनके अन्य स्वरूप तथा जीवन दर्शन को पुराणों में विस्तार मिला।

शिव के द्वारपालः- नंदी, स्कंद, रिटी, वृषभ, भृंगी, गणेश, उमा-महेश्वर और महाकाल।

शिव पंचायत के देवताः- 1.सूर्य, 2.गणपति, 3.देवी, 4.रुद्र और 5.विष्णु ये शिव पंचायत कहलाते हैं।

शिव पार्षदः- जिस तरह जय और विजय विष्णु के पार्षद हैं उसी तरह बाण, रावण, चंड, नंदी, भृंगी आदि शिव के पार्षद हैं। यहां देखा गया है कि नंदी और भृंगी गण भी है, द्वारपाल भी है और पार्षद भी।

शिव गणः- भगवान शिव के गणों में भैरव को सबसे प्रमुख माना जाता है। उसके बाद नंदी का नंबर आता और फिर वीरभद्र। जहां भी शिव मंदिर स्थापित होता है, वहां रक्षक (कोतवाल) के रूप में भैरवजी की प्रतिमा भी स्थापित की जाती है। भैरव दो हैं- काल भैरव और बटुक भैरव। दूसरी ओर वीरभद्र शिव का एक बहादुर गण था जिसने शिव के आदेश पर दक्ष प्रजापति का सर धड़ से अलग कर दिया। देव संहिता और स्कंद पुराण के अनुसार शिव ने अपनी जटा से 'वीरभद्र' नामक गण उत्पन्न किया।

इस तरह उनके ये प्रमुख गण थे- भैरव, वीरभद्र, मणिभद्र, चंदिस, नंदी, श्रृंगी, भृगिरिटी, शैल, गोकर्ण, घंटाकर्ण, जय और विजय। इसके अलावा, पिशाच, दैत्य और नाग-नागिन, पशुओं को भी शिव का गण माना जाता है। ये सभी गण धरती और ब्रह्मांड में विचरण करते रहते हैं और प्रत्येक मनुष्य, आत्मा आदि की खैर-खबर रखते हैं।

सप्तऋषि गण शिव के शिष्य हैंः- शिव ने अपने ज्ञान के विस्तार के लिए 7 ऋषियों को चुना और उनको योग के अलग-अलग पहलुओं का ज्ञान दिया, जो योग के 7 बुनियादी पहलू बन गए। वक्त के साथ इन 7 रूपों से सैकड़ों शाखाएं निकल आईं। अब यदि उक्त ऋषियों या उनके परंपरा के किसी महान ऋषि को हम शिव या उनका अवतार ही मानने लगे और उनका गुणगान करने लगे तो यह उचित नहीं होगा। इस तरह भ्रम का विस्तार ही होता है। अंगिरा ऋषि को शिव का सक्षात रूप माना जाता है। उसी तरह हम यदि भैरव को भी शिव माने तो यह पुराणिक विस्तार ही है।

प्रशासन ने नूना माजरा और सराय औरंगाबाद से हटवाया अवैध अतिक्रमण

एसडीम बहादुरगढ़ अभिनव सिवाच ने लिया मौके का जायजा।

परिवहन विशेष न्यूज

बहादुरगढ़ ,23 फरवरी। सोमवार को डीटीपी विभाग द्वारा बहादुरगढ़ बेरी रोड पर व नूना माजरा में अवैध कालोनियों पर तोड़फोड़ अभियान चलाया गया, जिसमें नूना माजरा गांव के राजस्व क्षेत्र में लगभग 250 वर्ग मीटर की चारदीवारी और कमरों सहित एक अनाधिकृत निर्माणाधीन संरचना को ध्वस्त कर दिया गया और एक संरचना को सील कर दिया गया, साथ ही सराय औरंगाबाद के राजस्व क्षेत्र में 30 मीटर प्रतिबंधित हरित पट्टी में एक अनाधिकृत निर्माण को हटाया गया।

एसडीएम अभिनव सिवाच ने बताया कि बहादुरगढ़, नूना माजरा व बेरी रोड पर अवैध कालोनियों पर डीटीपी विभाग द्वारा तोड़फोड़ की गई । उन्होंने आमजन से आह्वान किया कि अवैध कालोनियों में अपना पैसा निवेश न करें I

जिला प्रशासन द्वारा ऐसे खसरों के नंबरों की समय समय पर जानकारी दी जा रही है, जो अवैध है ।

विभागाध्यक्ष अपने-अपने विभाग से संबंधित समस्याओं का शीघ्र करें निपटान : एडीसी

परिवहन विशेष न्यूज

जिला स्तरीय समाधान शिविर में एडीसी जगनिवास ने सुनी लोगों की शिकायतें

झज्जर 23 फरवरी। झज्जर लघु सचिवालय स्थित सभागार में सोमवार को आयोजित समाधान शिविर में एडीसी जगनिवास ने नागरिकों की समस्याएं सुनते हुए सभी विभागाध्यक्ष को निर्देश देते हुए कहा कि नागरिकों की समस्याओं का प्राथमिकता के साथ शीघ्र समाधान करें।

एडीसी जगनिवास के समक्ष नागरिकों ने पेयजल आपूर्ति, सीवरेज सिस्टम दुरूस्त करवाना, नई पाइप लाईन बिछवाने, परिवार की आय दुरूस्त करवाने, बीपीएल कार्ड, अवैध कब्जे हटवाने बारे एवं विभिन्न सामाजिक पेंशन बनवाने से संबंधित शिकायतें रखी। उन्होंने सभी शिकायतों को गौर से सुनते हुए संबंधित अधिकारियों को त्वरित समाधान करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि समाधान शिविर आमजन और प्रशासन के बीच संवाद का एक सशक्त माध्यम है। ऐसे शिविरों से न केवल लोगों को एक स्थान पर प्रशासनिक सेवा मिलती है, बल्कि शिकायतों का समाधान भी तत्परता से हो पाता है। इससे जनता का प्रशासन पर विश्वास बढ़ता है और सुशासन को मजबूती मिलती है। इस अवसर पर डीआरओ मनबीर सिंह, डीडीपीओ निशा तंवर, एसीपी अखिल कुमार, एक्सईन लोक निर्माण विभाग सुमित कुमार, जिला कष्ट निवारण समिति के सदस्य राजपाल सिंह सहित सम्बंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

वहीं दूसरी और बहादुरगढ़ में एसडीएम अभिनव सिवाच, बेरी में एसडीएम रेणुका नांदल तथा बादली में एसडीएम डॉ रमन गुप्ता की अध्यक्षता में उपमंडल स्तरीय समाधान शिविर आयोजित कर लोगों की समस्याएं सुनते हुए राहत पहुंचाई गई।

गौशालाओं को नस्ल सुधार का केंद्र बनाने में सभी वर्गों का सहयोग जरूरी : श्रवण कुमार गर्ग

परिवहन विशेष न्यूज

– गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष श्रवण कुमार गर्ग ने ली अधिकारियों की बैठक

झज्जर, 23 फरवरी। हरियाणा गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष श्रवण कुमार गर्ग ने कहा कि गौशालाओं को नस्ल सुधार का केंद्र बनाने के लिए समाज के हर वर्ग का सहयोग आवश्यक है। सरकार इस दिशा में हर संभव मदद के लिए पूरी तरह तैयार है। वे सोमवार को झज्जर स्थित सभागार में अधिकारियों, गौशाला प्रबंधकों की बैठक को संबोधित कर रहे थे। इससे पहले एडीसी जगनिवास ने आयोग के अध्यक्ष का स्वागत करते हुए जिला में चल रही गौशालाओं की जानकारी दी।

आयोग के अध्यक्ष ने कहा कि वर्तमान समय में गौ नस्ल और फसल को बचाना सबसे बड़ी आवश्यकता है। इसके लिए प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना होगा, जिससे न केवल खेती की लागत कम होगी बल्कि पर्यावरण संरक्षण को भी बल मिलेगा। उन्होंने अधिकारियों से आह्वान किया कि प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित करने के लिए किसानों और गौशाला संचालकों को जागरूक किया जाए। उन्होंने गांव खरमाण स्थित गोकुल फार्म का दौरा कर नस्ल सुधार संबंधी गतिविधियों का निरीक्षण किया।

गौशालाओं की समस्याओं का होगा समन्वय से समाधान

उन्होंने कहा कि गौशालाओं से जुड़ी विभिन्न समस्याओं का समाधान आपसी समन्वय और सहयोग से किया जाएगा। बेसहारा गौवंश के स्थायी समाधान के लिए सरकार और जिला प्रशासन पूरी तरह सजग है। उन्होंने गौशाला संचालकों से आगे आने का आह्वान करते हुए कहा कि ऐसे गौवंश के आश्रय और देखभाल के लिए सामूहिक प्रयास जरूरी हैं। झज्जर जिला को बेसहारा गौवंश मुक्त बनाने के लिए हर वर्ग को आगे आना चाहिए।

पंजीकृत गौशाला में प्रति एक हजार गाय पर उपलब्ध होगी ई-रिक्शा

बैठक में चेयरमैन ने गौशालाओं को राहत देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण घोषणा करते हुए कहा कि प्रत्येक पंजीकृत गौशाला को प्रति एक हजार गाय पर एक ई-रिक्शा उपलब्ध कराया जाएगा। वहीं, जिन गौशालाओं में एक हजार से अधिक गायें हैं, उन्हें दो ई-रिक्शा प्रदान किए जाएंगे। इससे गौशालाओं में चारा, गोबर और अन्य आवश्यक कार्यों के संचालन में सुविधा मिलेगी। उन्होंने कहा कि पंजीकृत गौशालाओं को दो रुपए प्रति यूनिट की दर से बिजली मुहैया प्रदान की जा रही है। साथ ही जी राम जी योजना के माध्यम से गौशालाओं में नियमानुसार शैड, मिटटी भरत इत्यादि कार्य कराए जा सकते हैं।

प्रशासन और समाज से सहयोग की अपील

उन्होंने कहा कि गौ सेवा केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि समाज के प्रत्येक नागरिक को इसमें भागीदार बनना होगा। प्रशासन, गौशाला संचालक, किसान और आमजन मिलकर ही गौवंश संरक्षण और नस्ल सुधार के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने आमजन से नैतिक जिम्मेदारी समझते हुए गोवंश सेवा में भागीदारी की अपील की। सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं से भी आह्वान किया कि गौसेवा से बढक़र कोई सेवा नहीं है।

इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष विकास वाल्मिकी, गौ सेवा आयोग के उपाध्यक्ष पूर्ण यादव, सदस्य प्रमोद बंसल, एसीपी प्रदीप कुमार, डीडीपीओ निशा तंवर, पशुपालन विभाग के उपनिदेशक डॉ मनीष डबास, गौशाला प्रबंधक सहित संबंधित विभागों के अधिकारी व गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

झज्जर में बिजली उपभोक्ताओं की शिकायतों की सुनवाई के लिए बिजली अदालत आज

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 23 फरवरी। उपभोक्ताओं की बिजली संबंधी समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए उत्तर हरियाणा बिजली वितरण निगम (यूएचबीवीएन) द्वारा अधीक्षण अभियंता कार्यालय में 24 फरवरी मंगलवार को उपभोक्ता कष्ट निवारण फोरम की बैठक एवं बिजली अदालत का आयोजन किया जाएगा। उपभोक्ता कष्ट निवारण फोरम की बैठक का आयोजन सुबह 11 बजे से दोपहर दो बजे तक किया जाएगा।

यह अदालत फोरम के चेयरमैन एवं बिजली निगम के अधीक्षण अभियंता ऑपरेशन सर्कल झज्जर की अध्यक्षता में होगी। प्रवक्ता ने जानकारी देते हुए बताया कि बिजली उपभोक्ताओं की (बिजली चोरी संबंधी शिकायतों को छोडकर) अन्य शिकायतों को झज्जर कार्यालय में सुना जाएगा। इस दौरान बिजली बिल, कनेक्शन और अन्य तकनीकी समस्याओं से जुड़े परिवादों की समीक्षा की जाएगी। उन्होंने बताया कि निगम क्षेत्र झज्जर ग्रामीण व शहरी, माछरौली, बादली के उपभोक्ताओं की समस्याओं का निवारण किया जाएगा। यदि कोई उपभोक्ता कार्यकारी अभियंता या एसडीओ की कार्यवाही से संतुष्ट नहीं है, तो वह चेयरमैन और अधीक्षण अभियंता के समक्ष अपनी बात रख सकता है।

अग्निपथ योजना व रेगुलर एंट्री के तहत ऑनलाइन आवेदन पहली अप्रैल तक

- सेना भर्ती कार्यालय रोहतक के निदेशक ने दी जानकारी

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 23 फरवरी। सेना भर्ती कार्यालय, रोहतक द्वारा अग्निपथ योजना तथा रेगुलर एंट्री के तहत भर्ती वर्ष 2027 के लिए ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया आरंभ हो चुकी है, जो 01 अप्रैल तक चलेगी। इच्छुक अभ्यर्थी निर्धारित अवधि के दौरान आधिकारिक पोर्टल www.joinindianarmy.nic.in पर आवेदन कर सकते हैं।

सेना भर्ती कार्यालय रोहतक के निदेशक ने जानकारी देते हुए बताया कि भर्ती प्रक्रिया दो चरणों में आयोजित की जाएगी। प्रथम चरण में ऑनलाइन कंप्यूटर आधारित लिखित परीक्षा (सीईई) तथा द्वितीय चरण में भर्ती रैली आयोजित होगी। अभ्यर्थियों के लिए वेबसाइट पर पंजीकरण करवाना अनिवार्य है तथा 1 अप्रैल के बाद पोर्टल बंद कर दिया जाएगा।

उन्होंने बताया कि रोहतक, झज्जर, सोनीपत और पानीपत जिलों के ऐसे युवा, जिनका जन्म 01 जुलाई 2005 से 01 जुलाई 2009 के बीच हुआ है और जिन्होंने 10वीं या 12वीं की परीक्षा दी है तथा परिणाम की प्रतीक्षा कर रहे हैं, वे भी अन्य पात्रता शर्तें पूरी करने पर आवेदन कर सकते हैं।

अग्निपथ योजना के अंतर्गत अग्निवीर जनरल ड्यूटी, अग्निवीर क्लर्क व स्टोर कीपर टेक्निकल, अग्निवीर टेक्निकल, अग्निवीर ट्रेड्समैन (10वीं पास) तथा अग्निवीर ट्रेड्समैन (8वीं पास) के लिए आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। अभ्यर्थी अधिकतम दो श्रेणियों के लिए अलग-अलग आवेदन कर सकते हैं। रेगुलर एंट्री के तहत सैनिक नर्सिंग सहायक और सिपाही फार्मा पदों के लिए आवेदन किए जा सकते हैं। आवेदन शुल्क 250 रुपये निर्धारित है, जिसका भुगतान ऑनलाइन करना होगा।

उन्होंने युवाओं से अपील करते हुए कहा कि आवेदन करने से पूर्व नोटिफिकेशन को ध्यानपूर्वक पढ़ें और भर्ती प्रक्रिया को भली-भांति समझ लें। आवेदन करते समय अपना निजी मोबाइल नंबर और ईमेल आईडी सही दर्ज कर सबमिट अवश्य करें, ताकि भविष्य की सूचना समय पर प्राप्त हो सके।

शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी स्कूल श्री राम राधे ने किया कला और प्रदर्शनी में विजयी छात्रों को पुरस्कृत

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां आयोजित किए गए एक भव्य समारोह में नौबस्ता स्थित श्री राम राधे पब्लिक स्कूल में विज्ञान प्रदर्शनी एवं अंतर विद्यालय कला प्रतियोगिता 2025–26 के विजेताओं को पुरस्कृत कर उनका मनोबल बढ़ाया गया। इस प्रतियोगिता में 50 विद्यालयों के लगभग 600 से अधिक विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, रचनात्मकता और नवाचार की भावना को बढ़ावा देना था।

इस भव्य आयोजित किए गए कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे दक्षिण के एडीसीपी योगेश कुमार ने दीप प्रज्वलन के साथ किया। इस मौके पर विद्यालय के छात्रों द्वारा रंगारंग कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए। इस आयोजन के दौरान मुख्य अतिथि एडीसीपी योगेश कुमार एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने छात्रों द्वारा बनाए गए मॉडलों की सराहना करते हुए विज्ञान को दैनिक जीवन से जोड़ने पर जोर दिया कहा कि ऐसी प्रतियोगिताएँ रचनात्मक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देती हैं।

बच्चों के उज्जवल भविष्य का निर्माण करते हुए देश और समाज के हित में सार्थक शिक्षा प्रदान करने में अग्रणी नौबस्ता स्थित श्री राम राधे पब्लिक स्कूल में आयोजित इस प्रदर्शनी में कक्षा 1 से 9 तक के विद्यार्थियों ने 100 से अधिक मॉडल प्रस्तुत किए। जिसके प्रमुख आकर्षणों में – चंद्रयान-3, ऑर्गेनिक फार्मिंग, रेन वाटर हार्वेस्टिंग, स्मार्ट सिटी, 3D होलोग्राम आदि पर आधारित प्रोजेक्ट शामिल रहे। इसमें सर्वश्रेष्ठ विज्ञान मॉडल को पुरस्कार दिया गया।

इस अंतर विद्यालय कला प्रतियोगिता में छात्र / छात्राओं ने महाकुंभ का दृश्य, बनारस घाट, 2050 में भारत का दृश्य, दुनिया मेरे सपनों की इत्यादि विषयों पर अपनी कल्पनाओं को रंगों के माध्यम से कैनवास पर उतारा। इस प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि एडीसीपी योगेश कुमार के द्वारा विजयी प्रतिभागियों को मेडल, ट्रॉफी और प्रमाण पत्र भी प्रदान किए गए।

इस मौके पर संबोधित करते हुए संस्था के प्रखर शिक्षाविद प्रधानाचार्य साकेत सिंह ने कहा कि यह आयोजन बच्चों के समग्र विकास के लिए महत्वपूर्ण है, विज्ञान हमें तर्क देता है और कला हमें संवेदनशील बनाती है। इस कार्यक्रम में विद्यालय के संरक्षक और हर किसी के सुख दुख में सदैव खड़े होने वाले व्यवहार कुशल समाज सेवी श्री राम प्रकाश मिश्रा, श्री ब्रह्म प्रकाश मिश्रा, निदेशक श्री आशीष मिश्रा के साथ ही श्रुति पाण्डेय, शिक्षिक प्रतिनिधि श्रीमती दिव्या त्रिवेदी, श्रीमती अनुराधा शुक्ला सहित समस्त शिक्षक, शिक्षिकायें और अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे।

तेजस्विनी महिला मंडल द्वारा फाग रंगोत्सव का आयोजन महूं चंपा बाग में उत्साहपूर्वक किया गया

महूं मध्यप्रदेश में फाग उत्सव के कार्यक्रम में बड़ी संख्या में महिलाओं ने भाग लेकर होली के रंगों और फूलों के साथ आनंदपूर्वक उत्सव मनाया। महिलाओं के लिए रोचक गेम्स आयोजित किए गए तथा उन्हें "सजीली दुनिया", "फनी आंटी नागफनी", "रंगरंगीली फगुनिया", "बावली बन्नो" जैसे आकर्षक टाइटल देकर सम्मानित किया गया। साथ ही "अंधेर नगरी चौपट राजा" थीम पर तंबोला खेल भी आकर्षण का केंद्र रहा। कार्यक्रम से जुड़ी तृप्ति मिश्रा ने बताया कि संस्थापक ज्योति त्रिवेदी के मार्गदर्शन में मंडल पिछले 20 वर्षों से विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक आयोजन करता आ रहा है। इस अवसर पर संध्या मालवीय, निशा खरे, श्वेता भार्गव, निर्मला शर्मा, अनुपमा जैन, पारुल भार्गव, शीतल तिवारी, छाया पाण्डे, माया तिवारी, नीता जोशी एवं मनीषा शर्मा सहित अनेक सदस्य उपस्थित रहीं। कार्यक्रम में महू की प्रथम ई-रिक्शा चालक ज्योति यादव एवं अंजू यादव का भी विशेष सम्मान किया गया।

रिपोर्टिंग हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

पूसा कृषि विज्ञान मेला 2026: तकनीक और खेती का संगम, 25 फरवरी को होगा भव्य उद्घाटन

संगिनी घोष

कृषि नवाचारों का राष्ट्रीय मंच बनेगा पूसा परिसर भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान में आयोजित प्रेस वार्ता में निदेशक डॉ. सी.एच. श्रीनिवास राव ने घोषणा की कि 'पूसा कृषि विज्ञान मेला 2026' का आयोजन 25 से 27 फरवरी तक पूसा मेला ग्राउंड में किया जाएगा। इस तीन दिवसीय आयोजन का उद्घाटन केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान करेंगे।

ऐसे देखें तो, यह मेला केवल प्रदर्शनी नहीं बल्कि कृषि क्षेत्र में तकनीकी क्रांति का प्रत्यक्ष अनुभव कराने वाला मंच होगा।

"विकसित कृषि–आत्मनिर्भर भारत" पर रहेगा फोकस

मेले की थीम "विकसित कृषि–आत्मनिर्भर भारत" रखी गई है, जिसका उद्देश्य किसानों को आधुनिक तकनीकों, उन्नत बीज, स्मार्ट मशीनरी और डिजिटल समाधानों से जोड़ना है।

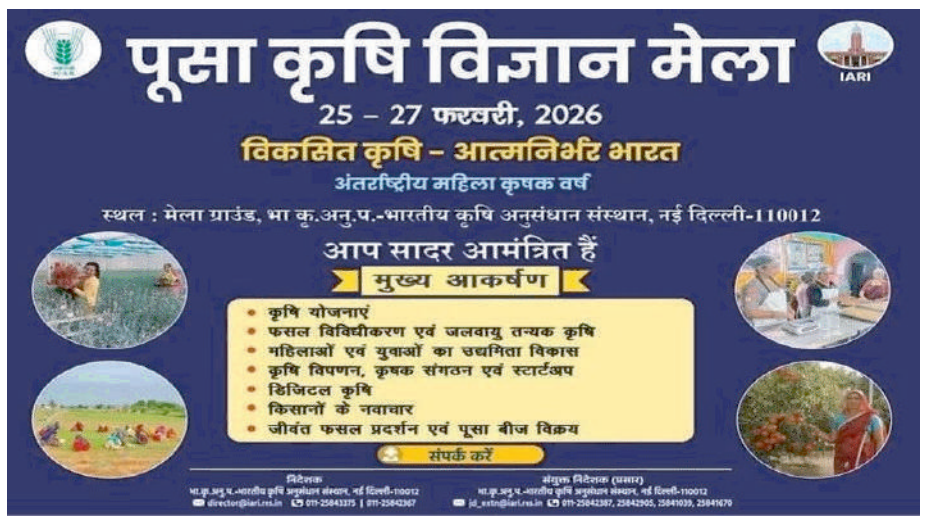

आयोजकों के अनुसार, रोबोटिक्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डिजिटल एग्रीकल्चर से जुड़े लाइव प्रदर्शन इस बार मुख्य आकर्षण होंगे।

एक लाख किसानों की भागीदारी की उम्मीद

अधिकारियों ने बताया कि देशभर से लगभग एक लाख किसान, कृषि वैज्ञानिक, स्टार्टअप प्रतिनिधि और उद्योग विशेषज्ञ इस मेले में भाग ले सकते हैं। समापन समारोह 27 फरवरी को केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी की उपस्थिति में आयोजित होगा।

क्यों महत्वपूर्ण है यह आयोजन

विशेषज्ञों का मानना है कि इस तरह के मेले किसानों को नई तकनीकों से परिचित कराने, लागत कम करने और उत्पादकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आधुनिक कृषि मॉडल देश की खाद्य सुरक्षा और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में सहायक हो सकते हैं।

ऐसे देखें तो, यह आयोजन पारंपरिक खेती और आधुनिक तकनीक के बीच सेतु का काम कर सकता है।

मुख्य बिंदु

* पूसा कृषि विज्ञान मेला 2026, 25–27 फरवरी तक आयोजित होगा।
* उद्घाटन केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान करेंगे।
* थीम — "विकसित कृषि–आत्मनिर्भर भारत।"
* रोबोटिक्स, AI और डिजिटल एग्रीकल्चर मुख्य आकर्षण।
* करीब एक लाख किसानों की भागीदारी की उम्मीद।
* समापन समारोह में केंद्रीय राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी उपस्थित रहेंगे।

आगे की दिशा

विश्लेषकों का मानना है कि यदि ऐसी तकनीक-आधारित पहलें निरंतर बढ़ती रहीं, तो भारतीय कृषि वैश्विक प्रतिस्पर्धा में और मजबूत बन सकती है। आने वाले वर्षों में स्मार्ट खेती और डेटा-आधारित निर्णय प्रणाली किसानों की आय बढ़ाने में अहम भूमिका निभा सकती है।

मथुरा रिफाइनरी में गैस रिसाव के बाद 'धमाका', नागरिक सुरक्षा ने किया मॉकड्रिल

परिवहन विशेष न्यूज

मथुरा। सोमवार को मथुरा रिफाइनरी के गेट नंबर नौ पर गैस रिसाव और जोरदार धमाके के बाद राहत कार्यों का सजीव चित्रण किया गया। दरअसल, यह रिफाइनरी और जिला प्रशासन द्वारा आयोजित एक 'ऑन-साइट कम ऑफ-साइट डिजास्टर ड्रिल' थी। इस दौरान नागरिक सुरक्षा की टीम ने डिवीजनल वार्डन भरत भूषण तिवारी के नेतृत्व में मुख्य भूमिका निभाई। मॉकड्रिल के दौरान मास्टर ट्रेनर व पोस्ट वार्डन अशोक यादव एवं घटना नियंत्रण अधिकारी मुकेश तिवारी की टीम ने संयुक्त रूप से मोर्चा संभाला और आपदा प्रबंधन की बारीकियों का प्रदर्शन करते हुए वार्डनों को तकनीकी मार्गदर्शन दिया।

इस अभ्यास में रिफाइनरी के महाप्रबंधक (HR) के. गोपीनाथ और डीजीएम (फायर) रजनीश तिवारी की देखरेख में सुरक्षा मानकों को परखा गया। रिफाइनरी की मेडिकल टीम ने घायलों को तत्काल प्राथमिक उपचार देने और पुलिस प्रशासन ने क्षेत्र की घेराबंदी कर यातायात व सुरक्षा व्यवस्था संभालने में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया। सहायक उपनियंत्रक नीरज श्रीवास्तव की देखरेख में संपन्न हुई इस ड्रिल का मुख्य उद्देश्य वास्तविक आपदा के समय सभी विभागों के बीच बेहतर तालमेल और त्वरित रिस्पांस को सुनिश्चित करना था।

भोपाल में साहित्य साधना का सम्मान

परिवहन विशेष न्यूज

हिन्दी लेखिका संघ, म.प्र. भोपाल द्वारा आयोजित 31वें वार्षिक उत्सव व कृति पुरस्कार एवं सम्मान समारोह में नर्मदापुरम की साहित्यकारा श्रीमती रेखा कापसे ₹कुमुद₹ को उनकी उत्कृष्ट काव्य कृति "अमृत ध्वनि" के लिए "श्रीमती मनोरमा द्विवेदी स्मृति पुरस्कार" प्रदान किया गया। यह पुरस्कार साहित्य के क्षेत्र में उनके समर्पण, सृजनात्मकता और विशिष्ट पहचान स्थापित करने के लिए दिया गया।

कार्यक्रम 22 फरवरी 2026 को हिन्दी भवन श्यामला हिल्स, भोपाल में आयोजित हुआ, जिसमें प्रदेशभर की साहित्यकार महिलाओं की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार आ. सूर्यकांत नागर जी, विशिष्ट अतिथि डॉ संतोष चौबे जी, कार्यक्रम अध्यक्ष आ करुणा सक्सेना जी, आ डॉ. साधना गंगराड़े एवं सचिव आ सुनीता यादव जी ने शाल व सम्मान पत्र व सम्मान निधि प्रदान करते हुए उनके उज्ज्वल और यशस्वी साहित्यिक जीवन की कामना की।

श्रीमती रेखा कापसे जिला चिकित्सालय नर्मदापुरम मे ब्लड बैंक प्रभारी सिस्टर की इस उपलब्धि से नर्मदापुरम जिले में हर्ष का वातावरण है। साहित्य प्रेमियों ने उन्हें शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए इसे क्षेत्र के लिए गौरवपूर्ण क्षण बताया।

बी.एस.ए. कॉलेज में नागरिक सुरक्षा के सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का भव्य समापन

परिवहन विशेष न्यूज

मथुरा। भारत सरकार द्वारा प्रायोजित एवं जिलाधिकारी नियंत्रक नागरिक सुरक्षा चन्द्र प्रकाश सिंह के कुशल मार्गदर्शन में बाबू शिवनाथ अग्रवाल डिग्री कॉलेज में वार्डनों एवं स्वयंसेवकों हेतु आयोजित सात दिवसीय क्षमता निर्माण प्रशिक्षण का सोमवार को सजीव प्रदर्शन के साथ भव्य समापन हुआ। नागरिक सुरक्षा निदेशालय, लखनऊ से विशेष रूप से पधारे अधिकारी सुमित मौर्य के गरिमामयी सानिध्य और दिशा-निर्देशों के अनुपालन में दिनांक 17 फरवरी 2026 से प्रारंभ हुए इस विशेष शिविर में स्वयंसेवकों को आपदा के समय 'प्रथम रक्षक' की भूमिका निभाने हेतु तैयार किया गया।

प्रशिक्षण का सफल संचालन अपर जिलाधिकारी/प्रभारी अधिकारी नागरिक सुरक्षा नन्द प्रसाद मौर्य के नेतृत्व में किया गया। समापन अवसर पर बी.एस.ए. कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ. ललित मोहन शर्मा ने प्रशिक्षित स्वयंसेवकों के सेवा भाव की सराहना की। इस दौरान चीफ वार्डन राजीव अग्रवाल, डिप्टी चीफ वार्डन कल्याण दास अग्रवाल, जिला आपदा विशेषज्ञ पूजा राना एवं सहायक उप नियंत्रक नीरज श्रीवास्तव ने उपस्थित रहकर सभी प्रतिभागियों को भविष्य में सक्रिय सेवा हेतु प्रोत्साहित किया।

मास्टर ट्रेनर द्वारा आपदा प्रशिक्षण के अंतिम चरण में पूर्व उप नियंत्रक जसवंत सिंह एवं पोस्ट वार्डन व मास्टर ट्रेनर इं. अशोक यादव द्वारा स्वयंसेवकों को विभिन्न आपातकालीन स्थितियों का 'मॉक ड्रिल' के माध्यम से व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। इस दौरान अग्निशमन के अंतर्गत आग के विभिन्न प्रकारों की पहचान और आधुनिक अग्निशमन उपकरणों के सही उपयोग का प्रदर्शन किया गया, तो वहीं खोज एवं बचाव (Search & Rescue) के तहत भूकंप या भवन ढहने जैसी परिस्थितियों में मलबे में फंसे लोगों को सुरक्षित बाहर निकालने की 'इंप्रोवाइज्ड तकनीकों' का अभ्यास कराया गया। इसी क्रम में जीवन रक्षक चिकित्सा के माध्यम से आपदा स्थिति में सीपीआर (CPR) देने, रक्तस्राव रोकने और घायलों को सुरक्षित स्ट्रेचर पर ले जाने की विधियां सिखाई गईं, साथ ही बाढ़ राहत प्रबंधन के तहत स्थानीय संसाधनों जैसे खाली बोतलों और पुराने टायर-ट्यूब की मदद से जीवन रक्षक राफ्ट तैयार करने का सफल प्रयोग भी साझा किया गया।

इस अवसर पर सीनियर स्टाफ ऑफिसर दीपक चतुर्वेदी, डिविजनल वार्डन भारत भूषण तिवारी और डिप्टी डिविजनल वार्डन राजेश कुमार मित्तल ने भी अपने अनुभव साझा किए। प्रशिक्षण का मुख्य लक्ष्य जिले में नागरिक सुरक्षा की एक ऐसी दक्ष टीम तैयार करना है, जो किसी भी दुर्घटना या प्राकृतिक आपदा के समय प्रशासन के साथ समन्वय स्थापित कर त्वरित राहत कार्य कर सके।

डॉक्टर श्रॉफ आई केयर इंस्टीट्यूट में हुआ ऑर्थोप्टिक CME का आयोजन

दरियागंज (दिल्ली) स्थित डॉ. श्रॉफ चैरिटी आई हॉस्पिटल की टीम ने की शिरकत

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। थुरा रोड़ स्थित बीएचआरसी डॉक्टर श्रॉफ आई केयर इंस्टीट्यूट में आयोजित ऑर्थोप्टिक CME में डॉ. श्रॉफ चैरिटी आई हॉस्पिटल, दरियागंज (दिल्ली) की टीम ने शिरकत की।

डॉक्टर श्रॉफ आई केयर इंस्टीट्यूट, वृन्दावन के वरिष्ठ प्रशासक सीपी मैसी ने बताया कि दिल्ली की टीम ने ऑर्थोप्टिक्स के क्षेत्र में नवीनतम तकनीकों और उपचारों पर प्रकाश डाला।साथ ही सीएमई में विशेषज्ञों ने आंखों की विभिन्न समस्याओं के इलाज पर चर्चा की।जिसमें जन्मजात मोतियाबिंद, भेंगापन, न्यूरो ऑप्थोमोलॉजी और बिनोकुलर विजन थेरेपी शामिल हैं।इस CME मैं देहरादून से लोग शामिल हुए 5 से 6 साहित 40 नेत्र सहायक ने भाग लिया।इन सभी का वृंदावन नेत्र विज्ञान विभाग एवं विजन सेंटर की टीम ने उनका जोरदार स्वागत किया।

इस मौक पर दिल्ली से आए डॉ. सोवीता राठ, वरिष्ठ ऑप्टोम प्रेम कुमार, प्रीति शर्मा, वृन्दावन की टीम से डॉ. करनप्रीत कौर, डॉ. हर्षित अग्रवाल, डॉ. स्नेहा पाल, अनिमेष,गौरव गर्ग, बबलू चौधरी, तरुण गोयल, कृष्णा पाल, प्रियंका रावत आदि की उपस्थिति विशेष रही।

सनातन प्रतिभा फाउंडेशन के बैनर तले सांस्कृतिक कार्यक्रम हुंकार सीजन 1 का हुआ आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

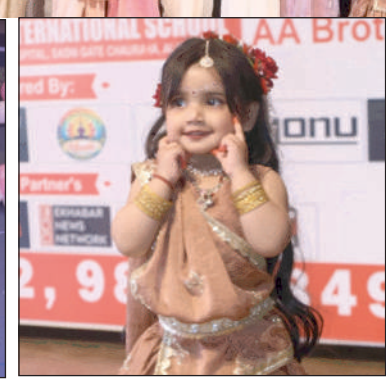

अलीगढ़। समाजसेवी संस्था सनातन प्रतिभा फाउंडेशन (मेरी संस्कृति मेरी पहचान) के बैनर तले चैत्र शुक्ल प्रतिपदा नवरात्रि से आरंभ होने वाले सनातनी हिन्दू नववर्ष विक्रम संवत्सर 2083 की अग्रिम हुंकार के रूप में निःशुल्क नृत्य, गायन, मॉडलिंग, एक्टिंग, योग, ताइक्वांडो, श्लोक व कविता पाठ प्रतियोगिता संग हरिनाम संकीर्तन के एक संयुक्त सांस्कृतिक कार्यक्रम ₹हुंकार सीजन 1₹ का आयोजन एस. आर. के. इन्टरनेशनल स्कूल निकट त्यागी हॉस्पिटल, सासनी गेट चौराहा अलीगढ़ में किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एस. आर. के. इन्टरनेशनल स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती ललिता वार्ष्णेय जी द्वारा भगवान श्री गणेश एवं माँ सरस्वती जी के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं पुष्प अर्पित करके कार्यक्रम का विधिवत शुभारम्भ किया गया। इस अवसर पर उन्होंने बच्चों एवं युवाओं के हृदय में भारत राष्ट्र एवं सनातन धर्म के प्रति समर्पण एवं प्रेम की अलख जगा रहे कार्यक्रम के आयोजक ₹डबल ए ब्रदर्स₹ के द्वारा अलीगढ़ में किए जा रहे कार्यक्रमों की खूब सराहना की। कार्यक्रम में विभिन्न शहरों से आए 70 प्रतिभागियों ने भाग लेकर देशभक्ति एवं भजनों पर आधारित अपनी प्रस्तुतियों से दर्शकों को रोमांचित कर डाला। कार्यक्रम के आयोजक डबल ए ब्रदर्स अभिषेक सक्सैना सनातनी एवं आशु सिंघल ने बताया कि हमारी संस्था सनातन प्रतिभा फाउंडेशन पिछले साढ़े 3 वर्षों से निरंतर बच्चों एवं युवाओं को भारतीय सभ्यता और वैदिक सनातन संस्कृति से जोड़ने के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन कर रही है। कार्यक्रम में एंकर अरुण तिवारी ने सभी प्रतिभागियों एवं दर्शकों को अपनी उत्कृष्ट प्रतिभा दिखाते हुए बेहतरीन अंदाज में मंच संचालन का कार्य किया। कार्यक्रम में यशस्वी वर्मा ने ₹काहे छेड़ छेड़ मुझे गरवा लगाए₹ गीत पर नृत्य की अपनी विशेष प्रस्तुति के द्वारा सभी दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम में एस. आर. के. इन्टरनेशनल स्कूल, सांगवान सिटी, द ब्लैक रोज रेस्टोरेंट, लक्मे सैलून एंड एकेडमी, खुशी योग सेंटर, ललित एम्बुलेंस सेवा, डेविल फोटोग्राफी, मोनू एंटरप्राइजेज एवं पुलिस प्रशासन का सहयोग सराहनीय रहा। इस मौके पर संस्था के अध्यक्ष अभिषेक सक्सैना सनातनी, उपाध्यक्ष साक्षी सक्सैना, उपाध्यक्ष शिखर अग्रवाल, महासचिव आशु सिंघल, उपसचिव अंकित वार्ष्णेय, मोहित यादव, मंजू शर्मा, ज्योति गोयल, जीत गोविंद सरकार, आयुष कृष्ण, खुशी श्रीवास्तव, गौरव श्रीवास्तव, अर्चना फौजदार, सोनिका सिंह, राजा राना, सारिका रायजादा, राज सक्सैना, प्रवीर सक्सैना, किरन सक्सैना, ललित कुमार, सपना वर्मा, जौली वार्ष्णेय, रश्मि आनंद, मिंटू डागौर, नंदिनी वार्ष्णेय, मनीषा, वेदिका, कुँवर आरिफ अली खान, रजनी रावत, गुलाब नबी, कामिनी, पवन गांधी, राजेश सोनकर, संजय सोनी, मुकेश सैनी, अनिल वर्मा, पवन शर्मा, गौरव रावत, प्रवीण कुमार, रविन्द्र वर्मा आदि सम्मानित अतिथि उपस्थित रहे।

अभिषेक सक्सैना सनातनी
संस्थापक/अध्यक्ष
सनातन प्रतिभा फाउंडेशन

अंदर का आदमी : मनुष्य के वास्तविक स्वरूप की खोज

● विजय गर्ग

हर व्यक्ति के भीतर एक नैतिक मार्गदर्शक होता है। जब हम गलत कार्य करने जाते हैं, तो भीतर से एक आवाज़ हमें रोकती है। यदि हम उस आवाज़ को सुनते हैं, तो जीवन सही दिशा में चलता है; यदि उसे अनसुना करते हैं, तो पश्चाताप जन्म लेता है।

मनुष्य केवल शरीर और बाहरी व्यक्तित्व का नाम नहीं है। उसके भीतर एक और संसार बसता है — विचारों, भावनाओं, मूल्यों और अंतरात्मा का संसार। यही "अंदर का आदमी" व्यक्ति की वास्तविक पहचान बनाता है। बाहरी रूप, पद या संपत्ति क्षणिक हो सकते हैं, परंतु भीतर का चरित्र ही स्थायी होता है।

अंदर का आदमी क्या है?

अंदर का आदमी हमारे मन, विवेक, नैतिकता और आत्मा का प्रतीक है। यह वह आंतरिक आवाज़ है जो सही और गलत के बीच अंतर बताती है। जब कोई हमें देख नहीं रहा होता, तब हम जो निर्णय लेते हैं, वही हमारे भीतर के व्यक्ति का परिचय देते हैं।

बाहरी और आंतरिक व्यक्तित्व में अंतर

बाहरी व्यक्तित्व – पहनावा, भाषा, सामाजिक छवि, पद और प्रतिष्ठा।
आंतरिक व्यक्तित्व – ईमानदारी, करुणा, संवेदनशीलता, धैर्य और नैतिक मूल्य।
बाहरी व्यक्तित्व दूसरों को प्रभावित कर सकता है, लेकिन आंतरिक व्यक्तित्व लोगों के हृदय में स्थान बनाता है।

अंतरात्मा की आवाज़

हर व्यक्ति के भीतर एक नैतिक मार्गदर्शक होता है। जब हम गलत कार्य करने जाते हैं, तो भीतर से एक आवाज़ हमें रोकती है। यदि हम उस आवाज़ को सुनते हैं, तो जीवन सही दिशा में चलता है; यदि उसे अनसुना करते हैं, तो पश्चाताप जन्म लेता है।

अंदर का आदमी क्यों महत्वपूर्ण है?

1. चरित्र निर्माण का आधार – व्यक्ति की सच्ची पहचान उसके चरित्र से होती है।
2. विश्वास अर्जित करता है – ईमानदार और संवेदनशील व्यक्ति पर लोग भरोसा करते हैं।
3. मानसिक शांति देता है – सही कार्य करने से आत्मसंतोष मिलता है।
4. समाज को बेहतर बनाता है – नैतिक व्यक्तियों से समाज में सद्भाव बढ़ता है।

अंदर के आदमी को मजबूत कैसे करें?

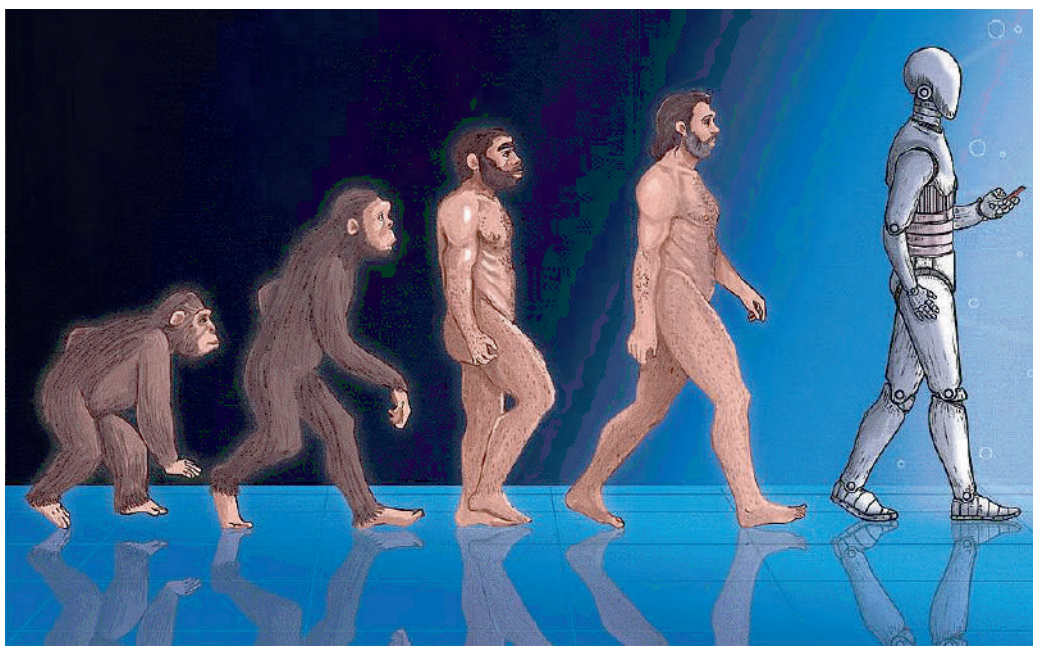

1. आत्मचिंतन करें
प्रतिदिन अपने व्यवहार और निर्णयों पर विचार करें।
2. सत्य और ईमानदारी अपनाएँ

छोटी परिस्थितियों में भी सत्य का साथ देना चरित्र को मजबूत करता है।
3. करुणा और सहानुभूति विकसित करें
दूसरों के दुःख को समझना हमें मानवीय बनाता है।
4. क्रोध और अहंकार पर नियंत्रण
संयम आंतरिक शक्ति का परिचायक है।
5. अच्छे साहित्य और विचारों का अध्ययन
प्रेरणादायक पुस्तकों और महान व्यक्तियों के विचारों से मन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

आधुनिक जीवन और आंतरिक संघर्ष

आज का जीवन प्रतिस्पर्धा, दिखावे और भौतिक सफलता की दौड़ से भरा है। इस दौड़ में कई बार व्यक्ति अपने भीतर की आवाज़ को दबा देता है। सफलता के साथ यदि नैतिकता न हो, तो उपलब्धियाँ भी अधूरी लगती हैं।

निष्कर्ष

अंदर का आदमी ही हमारी सच्ची पहचान है। वही हमारे निर्णयों को दिशा देता है और जीवन को अर्थपूर्ण बनाता है। बाहरी सफलता से अधिक महत्वपूर्ण है आंतरिक ईमानदारी और मानवता।
जब मनुष्य अपने भीतर के व्यक्ति को समझ लेता है, उसे मजबूत बनाता है और उसके अनुसार जीवन जीता है, तभी वह सच्चे अर्थों में सफल और संतुष्ट जीवन जी सकता है।
मनुष्य की महानता उसके बाहरी रूप में नहीं, बल्कि उसके अंदर बसे चरित्र और मानवता में होती है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

कचरे पर कड़ा रुख: न्यायपालिका के निर्देश और ज़मीनी सच्चाई

-सुनील कुमार महला

ठोस कचरे का प्रबंधन आज के समय की एक बहुत बड़ी आवश्यकता बन चुका है। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज लगातार बढ़ती जनसंख्या, बढ़ते शहरीकरण, औद्योगिकीकरण और उपभोग की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण धरती पर ठोस कचरे की मात्रा लगातार बढ़ रही है, जिससे हमारे पर्यावरण, पारिस्थितिकी तंत्र, मानव व जीवों के स्वास्थ्य और विभिन्न संसाधनों पर गंभीर प्रभाव पड़ रहा है। यदि इस कचरे का सही तरीके से संग्रहण, पृथक्करण, पुनर्चक्रण(रि-साइक्लिंग) और इसका समय रहते निपटान नहीं किया गया, तो नीले ग्रह(धरती पर) पर भूमि, जल और वायु प्रदूषण की समस्या और भी गंभीर हो सकती है।

वास्तव में, आज के समय में ठोस कचरे को बोझ नहीं बल्कि संसाधन के रूप में देखने की आवश्यकता है। गीले और सूखे कचरे को अलग-अलग करना, जैविक कचरे से खाद बनाना, प्लास्टिक और अन्य पदार्थों का पुनर्चक्रण(रि-साइक्लिंग) करना तथा जन-जागरूकता बढ़ाना इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। इसलिए यह कहा जा सकता है कि स्वच्छ और स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए ठोस कचरे का प्रभावी प्रबंधन केवल सरकार की ही जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह तो प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। जब समाज और प्रशासन मिलकर प्रयास करेंगे, तभी सतत विकास(सस्टेनेबल डेवलपमेंट) और स्वच्छ पर्यावरण का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकेगा।

बहरहाल, यहां पाठकों को बताता चलूं कि इस क्रम में हाल ही में माननीय सुप्रीम कोर्ट ऑफ इंडिया ने ठोस कचरा प्रबंधन नियमों के ठीक से पालन न होने पर चिंता जताई है और 1 अप्रैल 2026 से लागू होने वाले नए नियमों को प्रभावी बनाने के लिए कई निर्देश दिए हैं। अदालत ने कहा कि साफ और स्वस्थ पर्यावरण में जीना, जीवन के अधिकार का ही अहम-हिस्सा है। गौरतलब है कि न्यायमूर्ति पंकज मिथल और न्यायमूर्ति एस. वी. एन. भट्टी की पीठ ने 19 फरवरी को यह आदेश सुनाया। दरअसल, यह मामला भोपाल नगर निगम की उन अपीलों से जुड़ा था, जो नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के आदेश के खिलाफ दायर की गई थीं।

अदालत ने यह बात कही है कि अभी कानून में सुधार का इंतजार करना ठीक नहीं है, क्योंकि कचरे की खराब व्यवस्था से लोगों के स्वास्थ्य और देश की अर्थव्यवस्था दोनों पर असर पड़ता है। कोर्ट ने माना कि पूरे देश में कचरा प्रबंधन नियमों का पालन समान रूप से नहीं हो रहा है और घरों से गीला-सूखा-खतरनाक कचरा अलग-अलग करने की व्यवस्था अभी तक भी पूरी तरह से लागू नहीं हो पाई है। बड़े शहरों में बढ़ते कचरे के ढेर भी चिंता का कारण हैं।कोर्ट ने सख्त टिप्पणी करते हुए कहा 'अब नहीं तो कभी नहीं' और स्पष्ट किया कि अगर स्रोत पर कचरा अलग नहीं होगा और जरूरी सुविधाएं नहीं होंगी, तो अच्छे परिणाम की उम्मीद करना व्यर्थ है। अदालत ने पार्षदों, महापौरों और वार्ड प्रतिनिधियों को कचरा अलग कराने के लिए जिम्मेदार 'लीड फैसिलिटेटर' बनाने को कहा, ताकि हर नागरिक नियमों का पालन करे। यहां पाठकों को बताता चलूं कि लीड फैसिलिटेटर वह व्यक्ति होता है जो किसी कार्यक्रम, प्रशिक्षण, कार्यशाला या परियोजना में पूरे समूह की प्रक्रिया का नेतृत्व करता है और यह सुनिश्चित करता है कि गतिविधियाँ सही दिशा में और निर्धारित उद्देश्यों के अनुसार चलें। अच्छी बात यह है कि सभी नगर निकायों को 100% पालन के लिए समय-सीमा तय कर सार्वजनिक करने, प्रगति की फोटो जिलाधिकारी को भेजने और बड़े कचरा उत्पादकों से 31 मार्च तक नियमों का पालन सुनिश्चित कराने का निर्देश दिया गया है। इतना ही नहीं, प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों को चार तरह के कचरे (गीला, सूखा, सैनिटरी और विशेष) के अलग-अलग प्रबंधन की व्यवस्था जल्दी तैयार करने को कहा गया है।

अदालत ने पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को निर्देश दिया कि कचरा प्रबंधन नियमों को स्कूल की पढ़ाई में शामिल किया जाए और इन्हें सभी राज्यों की स्थानीय भाषाओं में भी उपलब्ध कराया जाए।अब नियम तोड़ने पर सख्त कार्रवाई होगी। पहले जुर्माना, बार-बार उल्लंघन पर कड़ी कार्रवाई और जरूरत पड़ने पर आपराधिक केस भी दर्ज किया जा सकता है। लापरवाही करने वाले अधिकारी भी इसके दायरे में आएंगे। कोर्ट ने मोबाइल अदालतों की संभावना पर भी विचार करने की बात कही है।

सुप्रीम कोर्ट ने यह भी कहा कि 1 अप्रैल 2026 से देश के सभी न्यायालयों और संस्थानों में भी कचरा प्रबंधन नियमों का पालन होना चाहिए। नगर निकायों को लोगों में जागरूकता फैलाने के लिए अभियान चलाने होंगे, जैसे कचरा कम करना, घर में खाद बनाना और सैनिटरी कचरे को सुरक्षित तरीके से पैक करना।ये सभी निर्देश इसलिए दिए गए हैं ताकि 1 अप्रैल 2026 से पहले पूरी तैयारी हो सके और नियम सही तरीके से लागू किए जा सकें।

अंत में यही कहूंगा कि माननीय सुप्रीम कोर्ट ने सही चिंता जताई है कि ठोस कचरा प्रबंधन केवल पर्यावरण नहीं, बल्कि जन-स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था से जुड़ा गंभीर मुद्दा है। नियमों के कमजोर अनुपालन, स्थानीय निकायों की जवाबदेही की कमी और योजनाओं जैसे अटल मिशन फॉर रिजुवेनेशन एंड अर्बन ट्रांसफॉर्मेशन तथा स्मार्ट सिटीज मिशन में खामियों के कारण समस्या बढ़ी है। समाधान के लिए सख्त नियम लागू करना, जनजागरण, अधिकारियों की जवाबदेही और बेहतर शहरी अवसंरचना निवेश अनिवार्य हैं, तभी कचरा-मुक्त भारत का लक्ष्य संभव हो पाएगा।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार, पिथौरागढ़, उत्तराखंड।

छत्रपति शिवाजी बनाम टीपू सुल्तान

वीरेंद्र सिंह परिहार

विगत दिनों कांग्रेस महाराष्ट्र इकाई के अध्यक्ष हर्षवर्धन सपकाल ने 18वीं शताब्दी के शासक टीपू सुल्तान को छत्रपति शिवाजी महाराज के समकक्ष बताया जो देश मे एक बहुत बडे वर्ग के लिये अस्वीकार्य ही नही, निंदनीय कृत्य भी है । इसकी चर्चा तब शुरु हुई जब मालेगांव के डिप्टी मेयर निहाल अहमद ने अपने कार्यालय मे टीपू सुल्तान की तस्वीर लगायी । इसपर जब मीडिया ने सपकाल से उनकी प्रतिक्रिया जाननी चाही तो उनका कहना था – हमे टीपू सुल्तान को वीरता के प्रतीक के रुप मे शिवाजी के समकक्ष मानना चाहिये । वहीं असदुद्दीन ओवैसी का कहना है – "टीपू सुल्तान हिंदू-मुस्लिम एकता के मिसाल थे । टीपू के पास से जो अंगूठी निकली, उस पर राम लिखा था ।" इसके पहले वर्ष 2015 मे कर्नाटक की कांग्रेस सरकार द्वारा टीपू सुल्तान की 266वीं जयंती मनाई गयी थी जिसके विरोध मे विश्व हिंदू परिषद् के साथ कैथोलिक ईसाइयों ने इसका पुरजोर विरोध करते हुए कर्नाटक बंद तक का आयोजन किया था जिसमे कुछ लोगों की जानें तक चली गयी थी ।

यदि ओवैसी जैसे लोग यह मानते हैं कि टीपू के पास से निकली अंगूठी मे राम लिखा था तो फिर टीपू राम जैसा समदर्शी क्यों नहीं ? इससे भी बडी बात यह है कि ओवैसी जैसे नेता फिर राम को अपना आदर्श क्यों नही मानते ? राम जन्म भूमि पर राम मंदिर निर्माण का सतत विरोध क्यों करते रहे ?

हिंदू एवं कैथोलिक संगठनों का बहुत पहले से कहना है कि टीपू एक धर्मान्ध एवं कट्टर शासक था । उसने हजारों हिंदुओं को इस्लाम में मतान्तरित किया । सिर्फ पुरूषों को ही नहीं, पता कितने बच्चों और महिलाओं की हत्या कराई । इस संबंध में इलाकुलम कुंजन पिल्लई

लिखते हैं- टीपू सुल्तान ने मालाबार आक्रमण के समय दो हजार ब्राह्मणों की हत्या करा दी, हजारों ब्राह्मण जगंलों में भाग गए और एक हजार हिंदुओं को धर्मांतरण के लिए श्री रंगपट्टम के किले में कैद रखा गया जो अंग्रेजों द्वारा 1793 में टीपू सुल्तान के मारे जाने के बाद ही मुक्त हो सके । कुर्ग राज परिवार की एक कन्या को जबरिया मुसलमान बनाकर टीपू ने उससे निकाह किया ।

विदेशी लेखकों ने भी टीपू सुल्तान की धर्मान्धता पर लिखा है । फुलाटॉन ने अपने रिपोर्ट में लिखा है कि सन-1783 में पालघाट के किले पर विजय के दौरान टीपू ने हजारों निहत्थे ब्राह्मणों की हत्या की। विलियम लोमने ने मालाबार मैन्यूयल में टीपू द्वारा तोड़े गए मंदिरों की संख्या सैकडों मे बताई है । राज वर्मा ने केरल में संस्कृत साहित्य के इतिहास मे लिखा है कि टीपू ने हिंदू देवी देवताओं की असंख्य मूर्तियों को तोड़ा व पशुओं के सिर काटकर मंदिरों को अपवित्र किया । उसने सभी प्रमुख शहरों के नाम बदल दिए थे जैसे मंगलौर को जलालाबाद, मैसूर को नजीराबाद, धारवाड़ को कुशैद-शबाद, डिंडीगुल को खालिदाबाद, कोझीकोड को इस्लामाबाद इत्यादि। टीपू की मृत्यु के बाद इन नगरों का पुनः मूल नाम रखा गया ।

टीपू की सहिष्णुता और उदारता को लेकर यह यशोगान किया जाता है कि वह श्री रंगपट्टनम मंदिर और श्रृंगेरी मठ को दान दिया करता था। श्रृंगेरी मठ के शंकराचार्य से उसका पत्र - व्यवहार भी होता था । तत्संबंध में डॉ० गंगाधरन का कहना है कि टीपू का विश्वास भूत पिशाचों में था और उनके दुष्प्रभाव से बचने के लिए तांत्रिक अनुष्ठानों के लिए वह पुजारियों को दान देता था । श्री रंगपटनम के पुजारियों ने टीपू को बताया था कि विशेष अनुष्ठान से वह दक्षिण भारत का सुल्तान बन जाएगा और उसी विशेष अनुष्ठान के लिए धन दिया जाता था । टीपू के हिंदू विरोध की हद यह थी कि राज्य के 65 बड़े अधिकारियों में एक भी हिंदू नहीं था। इतिहासकार एम. एस. गोपालन के अनुसार अनपढ़ और अशिक्षित मुसलमानों को महत्व के पदों पर रखा गया था ।

दूसरी तरफ जहां शिवाजी का प्रश्न है, उनका सख्त आदेश रहता था कि युद्ध के दौरान औरतों और बच्चों को कतई निशाना न बनाया जाए और उनके सम्मान की पूरी तरह रक्षा की उन्होंने जाए । कल्याण के मुस्लिम सुबेदार की बहू का प्रसंग इस इस संदर्भ में एक ज्योति स्तम्भ की भांति है । शिवाजी ने सम्पदाय व मजहब के आधार पर किसी को निशाना नही बनाया। कोई मस्जिद नहीं तोडी, उन्होंने किसी मुसलमान या अन्य मतावलंबी को धर्मान्तरित नहीं किया। वह पूरी तरह न्याय के पक्षधर थे। यहाँ तक कि पुत्र सम्भाजी को भी एक अपराध में प्रतापगढ किले में कैद करवा दिया था। छत्रपति शिवाजी का सख्त निर्देश था कि सैनिक अपने वेतन से ही जरूरत का सामान खरीदें, कही लूट-पाट यहाँ तक की बेगार की शिकायत नहीं आनी चाहिए । सेना के मार्च के दौरान किसानों की खड़ी फसल कतई नष्ट नहीं होनी चाहिए। एक बार छत्रपति को जब नौसेना की दृष्टि से जहाजों के निर्माण हेतु सागौन एवं आम के लकड़ी की आवश्यकता हुई जो उनके राज्य में पर्याप्त थी पर जब उन्हें पता चला कि इसका उपयोग किसान कृषि कार्यों में करते हैं तो उन्होंने अपने राज्य से उपरोक्त लकड़ी न कटवाकर क्रय कर राज्य के बाहर से बुलवाई।

शिवाजी का स्पष्ट आदेश था कि दुश्मनों के क्षेत्र में अमीर व ताकतवर मुसलमानों के अलावा किसी भी गरीब मुसलमान से धन न वसूलें। शिवाजी के प्रशासन में ही नहीं, सैन्य अधिकारियों के पद पर भी कई मुसलमान थे। इनमे दौलत खान, नूर खान बेग, सिददी हिलाल और मुल्ला हैदर के नाम उल्लेखनीय हैं। सूरत विजय के समय फ्रांसिस बर्नियर लिखता है- एक डच मिशनरी का प्रमुख मर गया था, इसलिए शिवाजी ने उसकी विधवा पत्नी व परिवार की अन्य महिलाओं को संरक्षण प्रदान किया, उनकी सुरक्षा में सैनिक लगाए। शिवाजी के राज्य में भ्रष्टाचार कतई अस्वीकार्य था। यहाँ तक कि सौतेले मामा मोहिते द्वारा रिश्वत लिए जाने की जानकारी मिलने पर शिवाजी ने उन्हें कारागार में डाल दिया था। औरंगजेब ने एक बार अपने एक शहजादे को संबोधित करते हुए लिखा था – ₹शहजादे, शिवाजी दुश्मन के मजहब, मस्जिद, औरत, मजहबी कलाम और फकीरों की इज्जत करता है। तभी तो उसकी इज्जत और शोहरत बुलंद मीनार की तरह बिना सर झुकाए आसमान को छू रही है। शहजादे, हुकूमत करनी है तो शिवाजी का चलन सीखो₹।

वस्तुतः शिवाजी सुशासन के आइकान थे। पचासों किलों के स्वामी होते हुए भी उन्होंने अपने परिवार से या किसी रिश्तेदार को किलेदार नही बनाया ताकि वह परिवारवाद से मुक्त होकर स्वच्छ और सख्त प्रशासन दे सकें।

पुर्तगाली वायसराय काल द सेंट व्हिंसेंट ने शिवाजी की तुलना सिकंदर और सीजर से की है। शिवाजी व मराठा इतिहास के प्रसिद्ध लेखक व नाट्यकार बाबा साहब पुरंदरे लिखते हैं – ₹शिवाजी महाराज की राजनीति और राज्यनीति मानों अमृत और संजीवनी दोनो ही है। उनकी शासन व्यवस्था सप्रयोग सिद्ध किया हुआ एक महाप्रकल्प ही है ।" बड़ी बात यह कि टीपू के बारे में जैसा कहा जाता है कि उसने अपने पिता हैदर अली के विशाल राज्य को खो दिया जबकि छत्रपति शिवाजी ने एक साधारण जागीरदार के पुत्र होकर इतना सशक्त मराठा साम्राज्य कायम किया जिसका औरंगजेब जैसा सम्राट भी कुछ खास नही बिगाड़ सका और आने वाले वर्षों में मराठा साम्राज्य पूरे देश में प्रभावी हुआ । भला ऐसे छत्रपति का मुकाबला किससे हो सकता है ? टीपू जैसे असहिष्णु, कट्टर और धर्मान्ध से तो कतई नहीं । शिवाजी जैसे शासक के बारे में यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी ₹न भूतो न भविष्यति ।

शादी की बदलती तस्वीर: दिखावे, अहंकार और टूटते रिश्ते

- डॉ० प्रियंका सौरभ

भारतीय समाज में शादी केवल दो व्यक्तियों का संबंध नहीं रही है, बल्कि इसे हमेशा से परिवार, समाज और संस्कारों से जुड़ी एक पवित्र संस्था माना गया है। विवाह को जीवनभर का साथ, सुख-दुख में एक-दूसरे का संबल और सामाजिक स्थिरता की आधारशिला समझा जाता रहा है। लेकिन बीते कुछ वर्षों में इस संस्था की तस्वीर तेजी से बदली है। आज शादी का मतलब साथ निभाने का संकल्प कम और सामाजिक प्रदर्शन अधिक होता जा रहा है। परिणामस्वरूप रिश्ते कमजोर हो रहे हैं और तलाक या अलगाव के मामले लगातार बढ़ते जा रहे हैं।

आज यह एक कड़वी सच्चाई है कि लोग शादी पर 20–25 लाख रुपये या उससे भी अधिक खर्च कर रहे हैं, लेकिन उसी शादी के कुछ महीनों या दिनों तक चलने की कोई गारंटी नहीं रह गई है। आंकड़े बताते हैं कि शहरी क्षेत्रों में लगभग 40 से 50 प्रतिशत वैवाहिक रिश्ते टूटने की कगार पर हैं या पहले ही टूट चुके हैं। यह केवल व्यक्तिगत विफलता नहीं, बल्कि एक गहरी सामाजिक समस्या का संकेत है, जिसे नज़रअंदाज़ करना आने वाले समय में भारी पड़ सकता है।

इस संकट का सबसे बड़ा कारण है दिखावे की संस्कृति। शादी अब एक निजी निर्णय नहीं, बल्कि एक भव्य इवेंट बन चुकी है, जिसमें होटल, डेस्टिनेशन वेडिंग, महंगे कपड़े, फोटोशूट और सोशल मीडिया पोस्ट सबसे अहम हो गए हैं। लोग यह सोचने में अधिक समय लगाते हैं कि मेहमान क्या कहेंगे, रिश्तेदार कितने प्रभावित होंगे और इंस्टाग्राम पर तस्वीरें कैसी दिखेंगी। लेकिन यह सोचने का समय नहीं निकालते कि जिस इंसान के साथ पूरी ज़िंदगी बितानी है, उसके विचार, स्वभाव, सहनशीलता और जीवन के प्रति दृष्टिकोण क्या हैं।

सोशल मीडिया ने इस समस्या को और गंभीर बना दिया है। हर व्यक्ति खुद को बेहतर दिखाने की कोशिश में अपनी वास्तविकता छिपा रहा है। शादी से पहले बनाई गई यह "परफेक्ट इमेज" शादी के बाद धीरे-धीरे टूटती है और जब सच्चाई सामने आती है, तब निराशा, टकराव और असंतोष जन्म लेता है। लोग समझ पाते हैं कि वे जिस इंसान से शादी कर बैठे हैं, वह वैसा नहीं है जैसा उन्होंने कल्पना की थी।

दूसरा बड़ा कारण है धैर्य की कमी और अहंकार की अधिकता। आज के समय में लोगों का पेशेंस लेवल लगभग शून्य पर आ गया है, जबकि ईगो का स्तर सौ पर पहुंच चुका है। छोटी-छोटी बातों पर रिश्तों में दरार आ जाती है। संवाद करने, समझाने और समझने की जगह लोग तुरंत निष्कर्ष निकाल लेते हैं कि यह रिश्ता काम नहीं करेगा। "मैं क्यों समझौता करूँ?" और "मेरी खुशी सबसे ऊपर है" जैसी सोच रिश्तों को खोखला कर रही है।

पहले रिश्तों में समस्याएं आती थीं, लेकिन उन्हें सुलझाने की कोशिश की जाती थी। आज समस्याएं आते ही लोग अलग होने को सबसे आसान समाधान मान लेते हैं। रिश्तों को निभाने की जगह उन्हें बदल देने की मानसिकता बढ़ती जा रही है। यह उपभोक्तावादी सोच केवल वस्तुओं तक सीमित नहीं रही, बल्कि अब रिश्तों में भी प्रवेश कर चुकी है।

एक और महत्वपूर्ण कारण है संयुक्त परिवार प्रणाली का टूटना और एकल परिवारों का बढ़ना। संयुक्त परिवारों में बच्चे बचपन से ही बड़ों को देखकर सहनशीलता, त्याग, जिम्मेदारी और रिश्तों को निभाने की कला सीखते थे। मतभेद होते थे, लेकिन उन्हें बातचीत और समझदारी से सुलझाया जाता था। आज एकल परिवारों में पले-बढ़े बच्चों को यह व्यवहारिक प्रशिक्षण बहुत कम मिल पाता है।

इसका मतलब यह नहीं कि एकल परिवार गलत हैं, लेकिन यह सच है कि उनमें सामूहिक जीवन का अनुभव सीमित होता है। परिणामस्वरूप जब युवा शादी के बाद नए रिश्तों और नई जिम्मेदारियों का सामना करते हैं, तो वे मानसिक रूप से उसके लिए तैयार नहीं होते। थोड़ी-सी असहमति भी उन्हें असहनीय लगने लगती है।

इसके साथ-साथ आर्थिक स्वतंत्रता और बदलती सामाजिक भूमिका भी रिश्तों पर असर डाल रही है। आज महिलाएं आत्मनिर्भर हैं, जो एक सकारात्मक बदलाव है, लेकिन इसके साथ ही अपेक्षाओं का टकराव भी बढ़ा है। दोनों पक्ष अपनी-अपनी स्वतंत्रता और अधिकारों को लेकर अधिक सजग हैं, जो सही भी है, लेकिन जब यह आपसी सम्मान और संवाद के बिना होता है, तब टकराव की स्थिति बन जाती है। बराबरी का अर्थ सहयोग होना चाहिए, न कि प्रतिस्पर्धा।

एक चिंताजनक पहलू यह भी है कि आज की पीढ़ी लंबे समय तक किसी एक निर्णय पर टिके रहने से डरती है। करियर हो, शहर हो या रिश्ता—हर जगह "अगर बेहतर विकल्प मिल जाए" वाली सोच हावी है। यही सोच शादी जैसे स्थायी संबंध को अस्थिर बना रही है। जब हर समय यह भावना बनी रहे कि इससे बेहतर कुछ और मिल सकता है, तो किसी भी रिश्ते में संतोष और स्थिरता संभव नहीं रह जाती।

इन सभी कारणों के चलते यह आशंका बढ़ रही है कि आने वाले समय में लोग शादी जैसी संस्था से ही दूरी बनाने लगेंगे। कुछ लोग पहले ही विवाह को बोझ या जोखिम के रूप में देखने लगे हैं। यदि यह प्रवृत्ति यूँ ही बढ़ती रही, तो इसका असर केवल व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि सामाजिक ढांचे पर भी पड़ेगा। परिवार, जो समाज की सबसे छोटी इकाई है, यदि कमजोर होगा तो समाज की स्थिरता भी खतरे में पड़ जाएगी।

हालांकि, यह कहना गलत होगा कि समस्या का कोई समाधान नहीं है। असल समस्या शादी में नहीं, बल्कि शादी के प्रति हमारी सोच और प्राथमिकताओं में है। जरूरत है दिखावे और फिजूलखर्ची को कम कर, आपसी समझ, संवाद और भावनात्मक जुड़ाव को प्राथमिकता देने की। शादी से पहले एक-दूसरे को समय देना, खुलकर बातचीत करना और अपेक्षाओं को स्पष्ट रखना बेहद जरूरी है।

इसके साथ ही समाज और परिवारों को भी यह समझना होगा कि शादी केवल रस्मों और परंपराओं का पालन नहीं, बल्कि दो व्यक्तियों को मानसिक रूप से जोड़ने की प्रक्रिया है। युवाओं को यह सिखाने की आवश्यकता है कि रिश्ते परफेक्ट नहीं होते, उन्हें धैर्य, सम्मान और समझदारी से मजबूत बनाया जाता है।

अंततः यह समय आत्ममंथन का है। यदि हम आज भी केवल दिखावे, अहंकार और जल्दबाजी को ही प्राथमिकता देते रहे, तो आने वाली पीढ़ियों के लिए रिश्ते केवल अस्थायी समझौते बनकर रह जाएंगे। लेकिन यदि हम समय रहते अपनी सोच बदले, तो शादी जैसी संस्था को फिर से विश्वास, स्थिरता और सम्मान का आधार बनाया जा सकता है। समाज का भविष्य इसी संतुलन पर निर्भर करता है।

(डॉ. प्रियंका सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), कवयित्री एवं सामाजिक चिंतक हैं।)

24 फरवरी 2002: नरेंद्र मोदी के राजनीतिक उत्कर्ष का प्रज्वलित आरंभ

[24 फरवरी 2002 : लोकतंत्र में जनादेश की सर्वोच्चता का दिवस]

[प्रचारक से पुरुषार्थी शासक बने नरेंद्र मोदी : 24 फरवरी का अमर अध्याय]

• प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

यह तिथि केवल एक उपचुनाव की घोषणा नहीं थी, यह भारतीय लोकतंत्र के विस्तृत आकाश में उगते एक नए सूर्य का प्रथम उषाकाल था। वडनगर की साधारण पृष्ठभूमि से निकला एक अनुशासित प्रचारक, नरेंद्र मोदी, जब राजकोट की राजकोट-II विधानसभा सीट से पहली बार विधायक निर्वाचित हुआ, तब वह क्षण प्रतीक बना—संघर्ष से शिखर तक की यात्रा का, विचार से शासन तक के रूपांतरण का। 45,298 मतों के साथ प्राप्त जनादेश केवल जीत का प्रमाण नहीं था; वह जनविश्वास का उद्घोष था। 14,728 मतों का अंतर उस दौर की राजनीतिक उथल-पुथल के बीच अटूट आस्था का संकेत बना। यह वही क्षण था जिसने 'प्रचारक से शासक' बनने की दिशा को स्थिरता दी और एक ऐसी यात्रा का प्रारंभ किया, जिसने आगे चलकर राष्ट्रीय परिदृश्य को गहराई से प्रभावित किया।

उस समय गुजरात का राजनीतिक वातावरण अनिश्चितताओं से भरा था। अक्टूबर 2001 में केशुभाई पटेल के स्थान पर मोदी को मुख्यमंत्री का दायित्व सौंपा गया, परंतु वे विधानसभा के सदस्य नहीं थे। संवैधानिक व्यवस्था के अनुसार 6 महीनों के भीतर सदन में प्रवेश आवश्यक था। इसीलिए गुजरात विधान सभा की सदस्यता प्राप्त करने के लिए उपचुनाव अनिवार्य बना। सीट खाली कर मार्ग प्रशस्त किया वजुभाई वाला ने। विपक्ष ने इसे अवसर के रूप में देखा और कांग्रेस प्रत्याशी अश्विनभाई मेहता को चुनावी मैदान में उतारा गया। आरोपों, आक्षेपों और तीखे प्रचार के बीच यह चुनाव केवल एक सीट का नहीं, नेतृत्व की वैधता का प्रश्न बन गया। किंतु मतदाता ने असमंजस नहीं, निर्णायक नेतृत्व चुना—और यही इस जीत की सबसे बड़ी शक्ति थी।

यह विजय आकस्मिक नहीं थी; इसके पीछे वर्षों की तपस्या और संगठनात्मक साधना थी। किशोर अवस्था में राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित होकर मोदी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्णकालिक प्रचारक के रूप में स्वयं को समर्पित किया। अनुशासन, समयनिष्ठा और जनसंपर्क उनके व्यक्तित्व की पहचान बने। 1987 में उन्होंने भारतीय जनता पार्टी में सक्रिय भूमिका निभाई और संगठन विस्तार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। 1990 के दशक में रणनीतिक कौशल के कारण वे राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हुए। किंतु चुनावी राजनीति का प्रत्यक्ष परीक्षण शेष था। राजकोट ने वह अवसर दिया, जहाँ वैचारिक प्रतिबद्धता और जनस्वीकृति का संगम हुआ। इसीलिए 24 फरवरी 2002 की जीत केवल मतगणना का परिणाम नहीं, बल्कि दीर्घकालीन विश्वास का प्रमाणपत्र बनी।

प्रचार अभियान के दौरान मोदी ने संवाद को हथियार बनाया। उन्होंने विकास, सुरक्षा और सुशासन को केंद्रीय विषय रखा। सभाओं में स्थानीय अपेक्षाओं को व्यापक दृष्टि से जोड़ा और प्रशासनिक स्पष्टता का आश्वासन दिया। विपक्ष ने वैचारिक प्रश्नों और अनुभव पर आक्षेप लगाए, किंतु मतदाता ने कार्यदृष्टि को प्राथमिकता दी। 57.32 प्रतिशत मत प्राप्त कर उन्होंने स्पष्ट जनादेश अर्जित किया, जबकि प्रतिद्वंद्वी को 38.68 प्रतिशत मत मिले। यह अंतर संख्यात्मक से अधिक मनोवैज्ञानिक था—इसने मुख्यमंत्री पद को वैधानिक स्थिरता दी। 25 फरवरी को शपथ ग्रहण के साथ सदन में उनका प्रवेश हुआ और शासन की दिशा को विधायी समर्थन मिला। यह क्षण लोकतंत्र में जनादेश की सर्वोच्चता का सजीव उदाहरण बना।

किन्तु यह विजय आसान समय में नहीं आई थी। 27 फरवरी 2002 को गोधरा की दुखद घटना और उसके बाद उपजे दंगों ने राज्य को गंभीर संकट में डाल दिया। प्रशासनिक क्षमता, राजनीतिक इच्छाशक्ति और सामाजिक संतुलन की कठोर परीक्षा हुई। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आलोचनाएँ उठीं, प्रश्नों की बौछार हुई। ऐसे समय में राजकोट से मिला विश्वास ही संबल बना। कानून-व्यवस्था की पुनर्स्थापना, पुनर्वास और दीर्घकालिक स्थिरता की दिशा में प्रयास किए गए। इसी कालखंड में आर्थिक पुनरुत्थान की रूपरेखा उभरी, जिसका विस्तार आगे चलकर वाइब्रेंट गुजरात जैसे निवेश सम्मेलनों में दिखाई दिया। औद्योगिक विकास, आधारभूत संरचना और ऊर्जा सुधारों ने राज्य को नए आत्मविश्वास से जोड़ा। इस परिवर्तन की आधारशिला राजकोट की वही पहली जीत थी।

राजकोट-II की विजय ने नेतृत्व को आत्मविश्वास की स्थायी धुरी प्रदान की। 2002, 2007 और 2012 के विधानसभा चुनावों में लगातार सफलता ने प्रशासनिक मॉडल को स्थिरता दी। ग्रामीण विद्युतीकरण, सड़क विस्तार, कृषि वृद्धि और निवेश आकर्षण जैसे क्षेत्रों में परिणामों ने परिवर्तन का संकेत दिया। शासन में लक्ष्यनिर्धारण, समयबद्ध क्रियान्वयन और उत्तरदायित्व की शैली प्रमुख रही। इस क्रम में विकास-केंद्रित विमर्श को बल मिला, जिसने समर्थकों के बीच उन्हें निर्णायक और परिणामोन्मुख नेता के रूप में स्थापित किया। राजकोट से प्रारंभ यह यात्रा केवल पदोन्नति की कहानी नहीं थी; यह शासन-कार्य संस्कृति में बदलाव का प्रयास थी, जिसका प्रभाव राज्य की सीमाओं से परे गया।

राष्ट्रीय राजनीति में 2014 का वर्ष उसी क्रम का विस्तार माना गया। प्रधानमंत्री पद की शपथ ने उस यात्रा को राष्ट्रीय आयाम दिया, जिसकी प्रथम सीढ़ी राजकोट में रखी गई थी। संगठनात्मक अनुभव, प्रशासनिक प्रयोग और चुनावी विश्वसनीयता—इन तीन आधारों पर राष्ट्रीय नेतृत्व का निर्माण हुआ। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सक्रिय कूटनीति, आधारभूत संरचना पर बल और जनकल्याण योजनाओं की व्यापकता ने समर्थकों के बीच उनकी पहचान को विशिष्ट बनाया। आलोचनाओं और प्रतिस्पर्धा के बावजूद चुनावी सफलता का सिलसिला जारी रहा। इस दृष्टि से 24 फरवरी 2002 केवल अतीत का अध्याय नहीं, वर्तमान की निरंतरता का स्रोत है।

आज जब उस ऐतिहासिक दिन को स्मरण किया जाता है, तो वह तिथि समय की धूल में खोई घटना नहीं, बल्कि परिवर्तन की ज्वलंत प्रेरणा बनकर सामने आती है। राजकोट ने एक प्रचारक को विधायी मान्यता दी, और उसी से प्रशासनिक प्रयोगों की श्रृंखला प्रारंभ हुई। समर्थकों की दृष्टि में यह यात्रा साधारण पृष्ठभूमि से वैश्विक नेतृत्व तक पहुँचे व्यक्तित्व की अप्रतिम गाथा है—अथक परिश्रम, अटूट संकल्प और जनविश्वास से निर्मित। 24 फरवरी 2002 इसलिए अमर है, क्योंकि उसने संघर्ष को अवसर में, विचार को शासन में और विश्वास को विजय में रूपांतरित किया। वह दिन केवल एक जीत नहीं था; वह युगारंभ था—और उसकी गूँज आज भी भारतीय लोकतंत्र की धड़कनों में सुनाई देती है।

राष्ट्रीय साहित्योत्सव एवं सम्मान समारोह का भव्य आयोजन

40 साहित्यकार, विद्वान व समाजसेवी सम्मानित, 5 पुस्तकों का विमोचन

डॉ. शंभु पंवार

नई दिल्ली,23 फरवरी। निराला साहित्यिक एवं कला मंच तथा हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में सती भाई साईं दास,कलानौर में राष्ट्रीय हिंदी–हरियाणवी साहित्योत्सव, सम्मान समारोह एवं पुस्तक लोकार्पण का भव्य आयोजन किया गया।आयोजन में देश–प्रदेश के ख्यातिलब्ध साहित्यकारों, भाषाविदों, शिक्षाविदों एवं समाजसेवियों ने सहभागिता की।

राष्ट्रीय सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में वैश्विक पटल पर सौहार्द और मानवता की अलग जगह रहे धरा धाम इंटरनेशनल प्रमुख एवं मानद कुलपति सौहार्द शिरोमणि संत प्रोफेसर डॉ. सौरभ पाण्डेय थे जबकि अध्यक्षता हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी पंचकूला के निदेशक डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड यूपी की पाठ्यक्रम समिति के सदस्य एवं शिक्षाविद डॉ. एहसान अहमद, वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर, अंतरराष्ट्रीय लेखक,पत्रकार- विचारक डॉ. शंभू पवार, प्रसिद्ध साहित्यकार लेखिका एवं गीतांजलि काव्य प्रसार मंच दिल्ली की राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ गीतांजलि नीरज अरोडा,गीत, वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. शिवकुमार शिव, शिक्षाविद डॉ. शिवनाथ सिंह, पूज्य संत महंत स्वामी रामसुखदास जी पूज्य संत महंत ईश्वर शाह जी, की गरिमामयी उपस्थिति रही।

समारोह का शुभारंभ सरस्वती वंदना से हुआ।निराला साहित्यिक कला मंच के अध्यक्ष डॉ.सत्यवीर निराला,जगजीत निराला ने अतिथियों का स्वागत सम्मान किया।सुशीला जांगड़ा ने हरियाणवी लोक गीत की शानदार प्रस्तुति दी।मनमोहक संचालन डॉ.अशोक कुमार मंगलेश ने किया। तत्पश्चात अतिथियों ने डॉ. सत्यवीर सिंह निराला, की (भाई वैर ना करो),पंडित मुल्क राज गाजियाबाद की (अल्फ़ाज़ - ए- - आकाश),डॉ. त्रिलोक चंद फतेहपुरी फतेहपुरी की(काव्य मंथन),डॉ. फूल कुमार राठी कलानौर की (हरियाणवी गोचनी),डॉ.जय भगवान सिंगला की (रविंद्र नाथ टैगोर 'राजऋषि')का लोकार्पण किया। तथा चालीस साहित्यकारों, पत्रकारों,विद्वानों, विशेषज्ञों एवं समाजसेवियों को उनके विशिष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया। आयोजन ने न केवल रचनाकारों को संवाद का मंच प्रदान किया, बल्कि युवाओं के लिए भी साहित्यिक प्रेरणा का सशक्त अवसर बना।विचार- विनिमय और रचनात्मक संवाद के माध्यम से हिंदी एवं हरियाणवी साहित्य की समृद्ध धारा को नया प्रवाह मिला। कार्यक्रम में संरक्षक डॉ. मधुकांत, डॉ.पूर्ण चंद्र टंडन, एडवोकेट बचनाराम अरोड़ा, डॉ. हनुमान कौशिक ,रोशन लाल तहसीलदार, डॉ. करतार सिंह, जाखड़ ,एडवोकेट बीरबल चित्रा, सत्यवान सौरव, नीरज राव, सुशील कुमार पत्रकार, सहित अनेक गणमान्यजन, शिक्षाविदों, प्रशासनिक अधिकारियों, अधिवक्ताओं, पत्रकारों एवं सांस्कृतिक कर्मियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित

कार्यक्रम के दौरान अमेरिका की यूनिवर्सिटी के मानद कुलपति डॉ सौरभ पाण्डेय द्वारा जगजीत सिंह निराला एवं डॉ.गीतांजलि अरोड़ा को डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। समग्र रूप से यह आयोजन हिंदी–हरियाणवी साहित्य के संवर्धन, सांस्कृतिक समन्वय और युवा प्रेरणा का प्रभावी उदाहरण बना।

सुनिश्चित है

जो अहम के वशीभूत हो ठूठ बने रह गए,
उनका एक न दिन तो पतन सुनिश्चित है,
जो ढलना भूल कर उम्र भर अकड़े रह गए,
उनका एक न दिन तो गिरना सुनिश्चित है ।

जो सुपरिवर्तन को सहज स्वीकार न सके,
उनकी एक न दिन तो अवनति सुनिश्चित है,
जो कमियों में सुधार का शिल्प न गढ़ सके,
उनकी एक न दिन तो गिरावट सुनिश्चित है ।

जो आचरण को सुव्यवस्थित न कर सके,
उनकी एक न दिन तो पराजय सुनिश्चित है,
जो समय की कीमत समय रहते न समझ सकें,
उनकी एक न दिन तो दुर्गति सुनिश्चित है ।

जो विनम्रता को व्यहवार में न उतार सके,
उनका एक न दिन तो ह्रास सुनिश्चित है,
जो ऊँच-नीच की दीवार को न गिरा सके,
उनका एक न दिन तो विषाद सुनिश्चित है।

जो कड़वाहट को मन से सहज न निकाल सके,
उनकी एक न दिन तो अस्वस्थता सुनिश्चित है,
जो सत्यता के 'आनंद'को न अपना सके,
उनकी एक न दिन तो शिकस्त सुनिश्चित है ।

– मोनिका डागा "आनंद'

न धृतराष्ट्र–गांधारी बनों प्रहरी..!

तीस से ज्यादा बच्चों ने हाथ की नस काट ली,
ऐसा लगा जैसे माता–पिता ने अंतिम सांस लीं।
हे पालकों क्यों? धृतराष्ट्र बन अपने घर बैठे हो,
बच्चों पर रखिए नज़र क्यों आँखें मून्दे बैठे हो।

लाख इसका दोष किसी ओर को चाहे दीजिए,
आप गांधारी सा आचरण तो उनसे न कीजिए।
संतान सेलफोन पे क्या? कर रही सुध लीजिए,
आत्मक्षति क्यों? हो रहीं उस पर ध्यान दीजिए।

युवामन डिजिटल संसार में गहराई से प्रभावित,
ऑनलाइन चैलेंज, हिंसक गेम्स क्षति संभावित।
माता–पिता, शिक्षक व समाज रखें इनसे संवाद,
घरेलू वातावरण ऐसा तैयार करें न जन्मे मवाद।
(संदर्भ–धमतरी में 'ब्लेड के पीछे छिपा सच')

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

अधिवक्ता संरक्षण अधिनियम राष्ट्रीय व संवैधानिक आवश्यकता : अधिवक्ता सुनीता कल्सन

परिवहन विशेष न्यूज

चंडीगढ़ : बार काउंसिल ऑफ पंजाब एंड हरियाणा की उम्मीदवार अधिवक्ता सुनीता कल्सन ने कहा है कि अधिवक्ता संरक्षण अधिनियम अब केवल मांग नहीं, बल्कि राष्ट्रीय और संवैधानिक आवश्यकता बन चुका है। उन्होंने जारी एक बयान में कहा कि जिस प्रकार डॉक्टरों की सुरक्षा के लिए विभिन्न राज्यों में विशेष कानून लागू किए गए हैं, उसी प्रकार अधिवक्ताओं की सुरक्षा के लिए भी विशेष अधिनियम बनाया जाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि अधिवक्ता न्याय व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं। यदि वे सुरक्षित नहीं होंगे तो आम नागरिक का न्याय पर विश्वास भी कमजोर होगा। वर्तमान में वकीलों पर हमलों के मामलों में सामान्य कानूनी धाराओं के तहत कार्रवाई होती है, जिससे मामलों में देरी और न्याय में बाधा आती है।

सुनीता कल्सन ने बताया कि वर्षों से बार एसोसिएशन और बार काउंसिल इस कानून की मांग उठाते रहे हैं, लेकिन राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी और बार एसोसिएशन और बार काउंसिल इस कानून की मांग उठाते केंद्र-राज्य के बीच जिम्मेदारी को लेकर असमंजस के कारण यह अधिनियम लागू नहीं हो सका। उन्होंने कहा कि अधिवक्ताओं पर

शारीरिक हमलों के अलावा झूठे मुकदमे, प्रशासनिक उत्पीड़न और पुलिस द्वारा चैंबरों में हस्तक्षेप जैसी घटनाएं भी बढ़ रही हैं।

उन्होंने मांग की कि ऐसा कानून बनाया जाए जिसमें अधिवक्ताओं पर हमला गैर-जमानती अपराध हो, एफआईआर दर्ज करना अनिवार्य हो तथा बिना सक्षम अनुमति गिरफ्तारी पर रोक हो। उनका कहना था कि अधिवक्ताओं की सुरक्षा लोकतंत्र और न्याय व्यवस्था की मजबूती से जुड़ा विषय है और इसे प्राथमिकता के आधार पर लागू किया जाना चाहिए।

आखिर सुन्नी 'एक्सिस' से कितनी प्रभावित होगी अरब-खाड़ी देशों और भारत की रणनीति?

कमलेश पांडेय

दुनिया में अमेरिकी वर्चस्व को चुनौती देने के लिए, उसके समर्थकों को मात देने के लिए, अपने अपने राजनीतिक प्रभाव, धार्मिक वर्चस्व और क्षेत्रीय दादागिरी को स्थायित्व देने के लिए पिछली शताब्दी में अनेक प्रयोग हुए, विभिन्न देशों पर आक्रमण किये गए या करवाए गए, यौद्धिक अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए सारे जहां में विभिन्न हथियार बंद गुट पैदा किए गए, करवाए गए और जो अशांति मचवाई गई, उससे मानवता और शासन दोनों आक्रांत हुए। सुन्नी एक्सिस ऐसी ही क्षुद्र कूटनीति का विस्तार है जो इजरायल के खिलाफ आक्रामक या उससे आत्मरक्षार्थ पहल भी समझा जा सकता है। हालांकि, इससे भारत विरोधी इस्लामिक ताकतों को भी बल मिलना स्वाभाविक है।

ऐसा नहीं है कि यह सबकुछ पहली बार हुआ, या हो रहा है, बल्कि जो क्षुद्र रणनीति प्राचीन कबीलाई सोच, मध्ययुगीन सामंती समाज और राजतंत्रीय शासकों के बीच कायम रही, जिसके तहत वे लोग एक दूसरे को मात देते, दिलाते फिरते थे, वही विनाशकारी सोच औद्योगिक क्रांति के बाद यूरोपीय कम्पनियों खासकर ब्रिटिश, फ्रांसीसी, डचेज और पुर्तगाली कम्पनियों के माध्यम से विश्वव्यापी आकार ग्रहण करती गई, जिससे उनके अपने-अपने उपनिवेश कायम हुए और उनमें भी एक दूसरे को मात देने की होड़ चली।

यही वजह है कि मनुष्य की युद्धगत प्रवृत्ति पर विराम नहीं लगा और हाथी-घोड़े, तलवार-भाले की लड़ाई आधुनिक वाहनों, हथियारों व बम-बारूद से लडी जाने लगी। इसी सैन्य व आर्थिक उन्माद वश प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध भी हुए, जिससे यूरोपीय देशों और एशियाई जापान तक का पतन हुआ। इसी बीच मौके का फायदा अमेरिका और सोवियत संघ ने उठाया और क्रमशः पूंजीवाद और साम्यवाद के धूरी बन गए। लेकिन साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाएं यहां भी नहीं थमीं, बल्कि अमेरिका ने चतुराई पूर्वक ब्रिटेन व पश्चिमी यूरोपीय देशों को साधकर मनोनुकूल विश्व व्यवस्था स्थापित की और रूस को पूर्वी यूरोप, एशिया व अफ्रीका तक में चुनौती देने लगा।

इसी बीच यूरोपीय एजेंट पाकिस्तान, और भारत के विश्वासघाती पंचशील मित्र चीन की हरकतों से एशियाई देश खरबूजा की तरह अमेरिका और सोवियत संघ (रूस) के बीच बंट गए। क्योंकि आत्मरक्षार्थ भारत ने जब सोवियत संघ यानी मौजूदा रूस के साथ भरोसेमंद सम्बन्ध स्थापित किए, तो अमेरिकी खलनीति को कड़ी टक्कर मिलने लगी। इससे परेशान अमेरिका ने सोवियत संघ में न केवल बिखराव के हालात पैदा कर दिए, बल्कि पूंजीपतियों को अपने पाले में करके रूस, चीन और भारत को अपने पक्ष में करके नचाने लगा।

अब अमेरिका की फितरत यह बनी कि रूस को यूक्रेन में, चीन को ताइवान व दक्षिण चीन सागर में तथा भारत को कश्मीर, लद्दाख और उत्तर-पूर्वी राज्यों में उलझाए रखकर अपने हथियार और ड्रग्स उद्योग को बढ़ावा दिया जाए। लेकिन चीन की नवसाम्राज्यवादी नीति और भारत की चतुर कूटनीति से अमेरिकी रणनीति धरी की धरी रह गई। प्रतिक्रिया वश तीनों देशों ने अमेरिका विरोधी रूख अख्तियार करने का प्लान बी तैयार कर लिया और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ब्रिक्स के गठन से जी-सात समूह परेशान रहने लगा।

ऐसा इसलिए कि अमेरिकी व यूरोपीय सहयोग से चीन और भारत ने आत्मविकास करके अब अमेरिका के लिए ही चुनौती बनकर उभर गए। वहीं, फ्रांस, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका, जापान जैसे देशों ने भी अमेरिकी निर्भरता घटाने के लिए भारत से सांठगांठ मजबूत कर ली। इससे अमेरिकी-यूरोपीय देशों को अरब और खाड़ी देशों तक में रुस-चीन-भारत की वैकल्पिक रणनीति से कड़ी टक्कर मिलने लगी।

चूंकि भारत अंतर्राष्ट्रीय मामलों में गुटनिरपेक्ष कूटनीतिक राजनीति करता है और रणनीतिक कूटनीतिक स्वायत्तता का हिमायती है, साथ ही रूस जैसे वफादार दोस्तों की कद्र करता है और चीन जैसे गद्दार दोस्तों को काबू में रखने के लिए ही अमेरिका-यूरोपीय-अरब देशों से भी मजबूत रिश्ते चाहता है, फिर भी भारत ने पूर्ण रूप से अमेरिकी नाटो के पाले में जाने से इनकार कर दिया और वन टू वन द्विपक्षीय रिश्तों व कारोबारी डील को तवज्जो देनी शुरू कर दी।

इससे अग्रसोची अमेरिका-चीन भारत से चिढ़ने लगे। फिर भारत को घेरने के लिए इस्लामिक चक्रब्यूह की रचना तेज हुई। पहले अब्राहम परिवार एकता, फिर इस्लामिक नाटो का गठन और अब सुन्नी एक्सिस के साइड इफेक्ट्स से निबटने के लिए भारत ने भी न केवल इजरायल, आर्मेनिया, ग्रीस बल्कि अफगानिस्तान, ईरान, यूएई, जैसे देशों को भी साधकर चल रहा है। ऐसा इसलिए कि पाकिस्तान, तुर्की, सऊदी अरब जैसे देश भारत विरोधी धुरी को मज़बूत कर चुके हैं और भारतीयों के विरुद्ध आतंकी चालें चल रहे हैं।

जानिए सुन्नी एक्सिस क्या है?

सुन्नी एक्सिस मुख्य रूप से तुर्की, कतर, पाकिस्तान और संभावित रूप से सऊदी अरब, मिस्र जैसे अरब देशों का उभरता गठबंधन है, जो ईरान के कमजोर होने के बाद मध्य पूर्व में रैडिकल सुन्नी विचारधारा (मसलन मुस्लिम ब्रदरहुड) पर आधारित है। यह इजरायल-विरोधी रुख अपनाते हुए क्षेत्रीय प्रभाव बढ़ाने का प्रयास है, जिसमें तुर्की की सैन्य शक्ति और कतर की वित्तीय सहायता प्रमुख हैं।

 # सुन्नी धुरी का अरब राजनीति पर प्रभाव

यह एक्सिस सऊदी अरब की इजरायल के साथ अब्राहम समझौते जैसी नीतियों को बाधित कर सकता है, जिससे सऊदी का रुख अधिक आक्रामक या तुर्की-समर्थक हो सकता है। इससे मिस्र और यूएई जैसे देशों में मुस्लिम ब्रदरहुड विरोधी तनाव बढ़ेगा, क्योंकि तुर्की-कतर इस विचारधारा को बढ़ावा दे रहे हैं, जो अरब राजतंत्रों के लिए खतरा है। कुल मिलाकर, शिया-सुन्नी संतुलन सुन्नी पक्ष की ओर झुकेगा, जिससे यमन, सीरिया और लेबनान में नई प्रतिस्पर्धा और अस्थिरता पैदा हो सकती है।

आखिर सुन्नी एक्सिस की रणनीति क्या है?

सुन्नी एक्सिस, जिसमें तुर्की, कतर, पाकिस्तान और संभवतः सऊदी अरब प्रमुख हैं, इजरायल को सैन्य, कूटनीतिक और वैचारिक मोर्चों पर घेरने की रणनीति अपनाएगा। इसके दृष्टिगत तुर्की अपनी मजबूत सेना और नाटो सदस्यता का उपयोग कर क्षेत्रीय दबाव बनाएगा, जबकि कतर मीडिया (अल जजीरा) के जरिए इजरायल-विरोधी प्रचार चला रहा है।

पाकिस्तान के परमाणु और गठबंधन का खतरा

पाकिस्तान की परमाणु क्षमता इस एक्सिस को 'न्यूक्लियर रियर' प्रदान करती है जो इजरायल की पारंपरिक श्रेष्ठता को चुनौती देते हुए तुर्की को अप्रत्यक्ष परमाणु छत्रछाया दे सकती है। वहीं यह गठबंधन सऊदी को इजरायल के साथ अब्राहम समझौते से दूर खींचकर अरब देशों को एकजुट करेगा, जिससे इजरायल बहिष्कृत हो सकता है।

सुन्नी एक्सिस से पैदा होने वाली दीर्घकालिक चुनौतियाँ

तुर्की के शासक एर्दोगन की चतुर कूटनीति मुस्लिम ब्रदरहुड जैसी विचारधाराओं को बढ़ावा देकर फिलिस्तीन मुद्दे पर सुन्नी एकता पैदा करेगी, जो इजरायल के लिए ईरान जैसी लेकिन अधिक संगठित धमकी बनेगी। नेफ्ताली बेनेट की चेतावनी के अनुसार, इजरायल को अब रक्षात्मक से आक्रामक रणनीति अपनानी पड़ेगी।

तुर्की का ₹M-प्लान₹ इजरायल के खिलाफ

तुर्की का ₹M-प्लान₹ इजरायल के खिलाफ एक कथित रणनीतिक योजना को संदर्भित करता है, जो हालिया मीडिया रिपोर्ट्स में उभरा है। यह मुख्यतः सुन्नी एक्सिस के संदर्भ में एर्दोगन की कूटनीति से जुड़ा है। यह प्लान तुर्की की क्षेत्रीय महत्वाकांक्षा पर आधारित है, जिसमें मुस्लिम ब्रदरहुड जैसी विचारधाराओं को बढ़ावा देकर सऊदी और अन्य अरब देशों को इजरायल-विरोधी मोर्चे पर एकजुट करना शामिल है। वहीं, तुर्की सीरिया में प्रॉक्सी गुटों (जैसे विद्रोहियों) का उपयोग कर इजरायल की उत्तरी सीमाओं पर दबाव बनाएगा, साथ ही कतर के साथ मिलकर अल जजीरा जैसे मीडिया के जरिए प्रचार चलेगा।

डॉ. अवतार सिंह ने पुणे में सिम्बायोसिस यूनिवर्सिटी कैंपस में मेडट्रॉनिक की एडवांस्ड कैडेवर प्रोडक्ट ट्रेनिंग में अहम भूमिका निभाई

अमृतसर 23 फरवरी (सहिल बेरी)

अमनदीप हॉस्पिटल ने उजाला सिग्नस हेल्थकेयर सर्विसेज़ के साथ पार्टनरशिप में ऑर्थोपेडिक्स डिपार्टमेंट के चेयरमैन डॉ. अवतार सिंह ने पुणे के लावले में मशहूर सिम्बायोसिस यूनिवर्सिटी कैंपस में मेडट्रॉनिक द्वारा ऑर्गनाइज़ किए गए एडवांस्ड कैडेवर प्रोडक्ट ट्रेनिंग प्रोग्राम में गर्व से हिस्सा लिया।

इस प्रोग्राम में पूरे भारत से जाने-माने नेशनल फैकल्टी ने हिस्सा लिया और एडवांस्ड फ्रैक्चर मैनेजमेंट टेक्नीक, इम्प्लांट इनोवेशन और कैडेवरिक हैंड्स-ऑन सर्जिकल ट्रेनिंग पर फोकस किया गया। अमनदीप हॉस्पिटल और उजाला सिग्नस ग्रुप को रिप्रेजेंट करने वाले डॉ. अवतार सिंह, चेयरमैन – डिपार्टमेंट ऑफ़ ऑर्थोपेडिक्स, अमनदीप और उजाला सिग्नस ग्रुप ऑफ़ हॉस्पिटल्स थे, जिन्होंने इस इवेंट में एकेडमिक लीडरशिप में अहम भूमिका निभाई।

डॉ. अवतार सिंह ने एडवांस्ड प्लेटिंग टेक्नीक पर एक जानकारी भरा सेशन दिया और कॉम्प्लेक्स ऑर्थोपेडिक ट्रॉमा केस को मैनेज करने में अपनी बहुत ज़्यादा क्लिनिकल एक्सपर्टीज़ शेयर की। कैडेवरिक डेमोंस्ट्रेशन के दौरान उनके हैंड्स-ऑन गाइडेंस, इंटरैक्टिव डिस्कशन और केस-बेस्ड लर्निंग को हिस्सा लेने वाले सर्जनों ने बहुत सराहा।

इस मौके पर बोलते हुए, डॉ. अवतार सिंह ने कहा, ₹टेक्नीक को बेहतर बनाने और मरीज़ों के नतीजों को बेहतर बनाने के लिए लगातार एकेडमिक जुड़ाव और हैंड्स-ऑन सर्जिकल ट्रेनिंग ज़रूरी है। ऐसे प्लेटफॉर्म हमें ज्ञान शेयर करने, नई टेक्नोलॉजी अपनाने और पूरे देश में ट्रॉमा केयर स्टैंडर्ड को और मज़बूत करने की इजाज़त देते हैं।₹

इस हिस्सेदारी से अमनदीप हॉस्पिटल की एकेडमिक एक्सीलेंस, इनोवेशन और ऑर्थोपेडिक्स केयर में तरक्की के लिए लगातार कमिटमेंट का पता चलता है।

अमनदीप ग्रुप एक जाना-माना हेल्थकेयर नेटवर्क बन गया है, जिसमें 750 से ज़्यादा बेड और छह खास जगहों पर 170 से ज़्यादा स्पेशलिस्ट डॉक्टरों की एक जानी-मानी टीम है — अमृतसर में दो स्टेट-ऑफ-द-आर्ट हॉस्पिटल, और पठानकोट, फिरोजपुर, श्रीनगर और तरनतारन में एक-एक हॉस्पिटल। सर्विस की एक बड़ी विरासत के साथ, ग्रुप ने 25 लाख से ज़्यादा मरीज़ों की ज़िंदगी को सफलतापूर्वक बदल दिया है, और इस इलाके में आसानी से मिलने वाली, सस्ती और अच्छी हेल्थकेयर के लिए लगातार स्टैंडर्ड को बढ़ाया है।

राउरकेला में BSNL और SAIL के करोड़ों के केबल चोरी का मामला: स्क्रैप माफिया सक्रिय, प्रशासन की चुप्पी

परिवहन विशेष न्यूज

राउरकेला, 23 फरवरी 2026: ओडिशा के औद्योगिक शहर राउरकेला में भारतीय दूरसंचार निगम लिमिटेड (BSNL) के अधीन बिछाए गए लाखों-करोड़ों रुपये मूल्य के तांबे के केबल बड़े पैमाने पर चोरी हो रहे हैं। स्थानीय निवासियों और सूत्रों के अनुसार, रातों-रात चोरों के संगठित दल कई मीटर लंबे केबल उखाड़कर ले जा रहे हैं, जिससे दूरसंचार सेवाएं बुरी तरह प्रभावित हो रही हैं।

शहर के विभिन्न इलाकों में BSNL के भूमिगत और ऊपरी केबल नेटवर्क को निशाना बनाया जा रहा है। तांबे की बढ़ती कीमतों के कारण ये केबल स्क्रैप माफियाओं के लिए आकर्षण का केंद्र बन चुके हैं। चोर पहले तांबे के तार काटते हैं, फिर इन्हें स्क्रैप के रूप में बेच देते हैं। सूत्र बताते हैं कि कुछ मामलों में स्थानीय थानों की मिलीभगत या लापरवाही के कारण चोर बेखौफ होकर यह वारदात अंजाम दे रहे हैं। BSNL प्रशासन की ओर से अभी तक कोई ठोस कार्रवाई या आधिकारिक बयान सामने नहीं आया है, जिससे आम जनता में रोष बढ़ रहा है।

इसी तरह, राउरकेला स्टील प्लांट (RSP/SAIL) द्वारा बिछाए गए हजारों मीटर केबल और ऑप्टिकल फाइबर का भी यही हाल है। प्लांट के परिसर और आसपास के क्षेत्रों में कई सौ करोड़ की लागत से स्थापित इंफ्रास्ट्रक्चर को स्क्रैप माफियाओं ने निशाना बनाया हुआ है। तांबे की कीमतों में अकूत वृद्धि ने इन चोरियों को और प्रोत्साहित किया है। हाल के महीनों में देशभर में BSNL केबल चोरी के कई मामले सामने आए हैं, जैसे मंगलुरु में 70 लाख, नागपुर में 14 लाख और अन्य शहरों में करोड़ों के नुकसान के केस, लेकिन राउरकेला में स्थिति और गंभीर बताई जा रही है।

स्थानीय लोग आरोप लगा रहे हैं कि पुलिस और प्रशासन की चुप्पी से चोरों को संरक्षण मिल रहा है। एक निवासी ने नाम न छापने की शर्त पर बताया, ₹रात में चोर खुले आम काम करते हैं, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं होती। इससे इंटरनेट, लैंडलाइन और मोबाइल सेवाएं बार-बार ठप हो जाती हैं।₹ विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसी चोरियों से न केवल सरकारी संपत्ति को नुकसान हो रहा है, बल्कि डिजिटल इंडिया जैसे अभियानों पर भी असर पड़ रहा है।

BSNL और SAIL अधिकारियों से संपर्क करने पर कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। पुलिस सूत्रों ने कहा कि कुछ पुराने मामलों में गिरफ्तारियां हुई हैं, लेकिन बड़े पैमाने की जांच जारी है। शहरवासियों ने मांग की है कि तत्काल सख्त कार्रवाई हो, सीसीटीवी बढ़ाए जाएं और स्क्रैप डीलरों पर नजर रखी जाए। यदि स्थिति नहीं सुधरी तो यह दूरसंचार और औद्योगिक विकास के लिए बड़ी चुनौती बन सकती है।

झारखंड के गिरिडीह में चुनाव के दौरान मारपीट ,फायरिंग,दो घायल

कार्तिक कुमार परिच्छा स्टेट हेड -झारखंड

रांची, नगर निगम चुनाव में मतदान के दौरान वार्ड नंबर 18 में दो पक्षों में जमकर मारपीट हुई. मारपीट और हंगामें के बीच पुलिस को काफी मशक्कत करनी पड़ी. जानकारी के अनुसार मतदान को लेकर दो पक्ष आपस में भिड़ गए. मामला इतना बिगड़ गया कि दोनों पक्षों की ओर से फायरिंग भी की गई. गोलीबारी की घटना में दो लोग घायल हो गए हैं. दोनों घायलों को बेहतर इलाज के लिए धनबाद रेफर कर दिया गया है. इस दौरान आसपास के दुकानों में तोड़फोड़ भी की गई.यह घटना गिरिडीह नगर निगम क्षेत्र के बख्शीडीह रोड और चैताडीह के बीच में घटित हुई है. घटना की सूचना मिलते ही गिरिडीह के डीसी और एसपी घटनास्थल पर पहुंच गए. पुलिस को भीड़ को तीतर बीतर करने के लिए बल प्रयोग करना पड़ा. गोली लगने से घायल दो लोगों में से एक की स्थिति चिंताजनक बनी हुई है. खबर लिखे जाने तक घायलों की पहचान नहीं हो पाई है और न ही यह पता चल पाया है कि आपस में भिड़ने वाले दो गुट कौन-कौन थे।

संस्कृति और शिक्षा का प्रेरक श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय का वार्षिकोत्सव संपन्न

नईदिल्ली। बदलते भारत के परिवेश में शिक्षा आज केवल पाठ्य पुस्तकों तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि यह संस्कार, चरित्र निर्माण और सांस्कृतिक जागरूकता का सशक्त माध्यम बनती जा रही है। इसी उद्देश्य को मूर्त रूप देते हुए सरस्वती बाल मंदिर सीनियर सेकण्डरी स्कूल परिसर राजौरी गार्डन में श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय का 48वाँ वार्षिकोत्सव अत्यंत गरिमामय एवं उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। रंग-बिरंगी सजावट, पारंपरिक परिधान और वैदिक मंत्रोच्चार से सुसज्जित यह आयोजन भारतीय संस्कृति की समृद्ध परंपराओं का जीवंत उदाहरण बन गया। कार्यक्रम में "अनेकता में एकता" की भावना स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुई। जिसने उपस्थित जनसमूह को भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की गहराई से परिचित कराया।

समारोह की अध्यक्षता उद्योगपति कमल कुमार गुप्ता ने की। मुख्य वक्ता के रूप में विश्व हिंदू परिषद् के अंतरराष्ट्रीय संगठन महामंत्री मिलिन्द परांडे ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि रामायण और महाभारत जैसे महान ग्रंथ केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला सिखाने वाले आदर्श ग्रंथ हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से आग्रह किया कि वे आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ अपने सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं को भी आत्मसात करें। मुख्य अतिथि के रूप में संजय सिंघल, स्वागताध्यक्ष कौशल कोठारी, सानिध्य मांगी लाल पारीक रहे ।

संस्कृत महाविद्यालय के प्रधान रवीन्द्र गुप्ता एवं प्राचार्य डॉ. जय प्रकाश शर्मा की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा को और भी बढ़ा दिया। सभी अतिथियों का पारंपरिक रूप से तिलक, पुष्पमाला एवं स्मृति-चिह्न भेंट कर सम्मान किया गया।

जीडिमेट्ला में श्री आईमाता मंदिर में ध्वजारोहण कार्यक्रम आयोजित

परिवहन विशेष न्यूज

जीडिमेट्ला में सीरवी समाज की आस्था के केंद्र श्री आईमाता मंदिर व श्री शीतलामाता मंदिर पर बाबूलाल चोयल, हुक्माराम सोलंकी परिवार एवं समाज बन्धुओं के सानिध्य व पंडित बालराज के मंत्रोच्चारण के बीच ध्वजारोहण कार्यक्रम आयोजित किया गया। आज यहाँ जारी प्रेस विज्ञप्ति में सोहनलाल परिहार ने बताया कि ज्योत प्रज्ज्वलित कर गाजे-बाजे के साथ नाचते गाते हुए भव्य शोभायात्रा, पूजा-अर्चना, आरती के पश्चात श्री आईमाता मंदिर पर बाबूलाल, सुनील, संतोष चोयल परिवार व शीतलामाता मंदिर पर हुक्माराम, राकेश, राजेश सोलंकी परिवार द्वारा ध्वजा रोहण किया गया। लाभार्थी बाबूलाल चोयल व हुक्माराम सोलंकी परिवार का बडेर संरक्षक मांगीलाल काग, अध्यक्ष रावतराम बर्फा, उपाध्यक्ष सोहनलाल परिहार, उपाध्यक्ष दुर्गाराम मुलेवा समस्त कार्यकारणी सदस्यगण व समाज बन्धुओं ने

राजस्थानी साफे से विशेष सम्मान किया। लाभार्थी परिवार ने सम्मान के लिए सभी का आभार जताया। समाज बंधुओ व महिलाओं ने राजस्थानी वेष-भूषा में नाचते-गाते हुए महोत्सव का लाभ लिया। पधारे समाज बन्धुओं व भक्तों के लिए महाप्रसादी की व्यवस्था कार्यक्रम स्थल पर की गयी।

रावतराम बर्फा ने बताया कि सपरिवार समाज बंधुओं द्वारा

ध्वजारोहण कार्यक्रम मनाना समाज के लिए गर्व की बात है। उन्होंने पधारे समाज बंधुओं का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का विशेष कवरेज जगदीश सीरवी ने किया। मंच का संचालन सोहनलाल परिहार ने किया। अध्यक्ष रावतराम बर्फा के धन्यवाद ज्ञापित किया।

राष्ट्रपति के कार्यक्रम में शामिल होने मुख्यमंत्री को डीन ने किया आमंत्रित

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन से आज कांके रोड रांची स्थित मुख्यमंत्री आवासीय कार्यालय में मणिपाल टाटा मेडिकल कॉलेज, बारीडीह जमशेदपुर के प्रभारी डीन डॉ० हरीश चंद्र बंधु ने मुलाकात की। इस अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री को उन्होंने आगामी 26 फरवरी 2026 को मणिपाल टाटा मेडिकल कॉलेज परिसर में आयोजित कार्यक्रम में सम्मिलित होने हेतु सादर आमंत्रित किया।

सरकारी पार्टी विधानसभा चलाने की कोई इच्छा नहीं जताती है:कोंग्रेस

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : विधानसभा में हंगामा हो रहा है। किसानों के मुद्दे पर सदन में हंगामा हो रहा है। कांग्रेस और BJD विधायकों के हंगामे से विधानसभा हिल रही है। स्पीकर ने सदन स्थगित करने के बाद सर्वदलीय बैठक बुलाई है। कांग्रेस MLA तारा बहिनीपति ने इस पर प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि सरकारी पक्ष सदन चलाने को तैयार नहीं है।बजट के दौरान चर्चा से सदन चला था। हमने मंडी की समस्या के कारण मीटिंग स्थगित कर दी थी। लेकिन सरकार चर्चा के लिए नहीं गई। मंडी में हजारों बोरी धान पड़ा है। सरकार को यह दिखाई नहीं दे रहा है।

तारा ने फिर कहा कि एपस्टीन फाइल पर पूरी दुनिया में चर्चा हो रही है। इसमें प्रधानमंत्री और केंद्रीय मंत्री का लिंक है। दुनिया के कई देशों में कार्रवाई हो रही है। भारत में कार्रवाई क्यों नहीं होगी? CBI जांच क्यों नहीं होगी। कांग्रेस विधायक ने कहा, जबकि देश के कई राज्यों में इस पर चर्चा हो रही है, हमने भी इस मुद्दे पर चर्चा की मांग की है।

भुवनेश्वर कोर्ट के सामने हिट एंड रन

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : भूबनेश्वर में भयानक सड़क हादसा। कल्पना चौक के पास भुवनेश्वर कोर्ट के सामने हिट एंड रन। इनोवा कार ने महिला के सिर को कुचल दिया। महिला को गंभीर हालत में कैपिटल हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया। हादसे के बाद इनोवा कार मौके से भाग गई।एक पति, पत्नी और बच्चा आज सुबह किसी काम से बाइक पर जा रहे थे।इसी समय, तेज़ रफ़्तार से आई किलर इनोवा कार ने बाइक को टक्कर मार दी और महिला के सिर के ऊपर से निकल गई। कोर्ट के सामने सड़क खून से लथपथ हो गई। स्थानीय लोगों ने महिला को लहूलुहान हालत में बचाया। उसे तुरंत कैपिटल हॉस्पिटल भेजा गया। हालांकि, एक्सीडेंट करने के बाद इनोवा कार के ड्राइवर की मौके पर ही मौत हो गई। एक्सीडेंट के बाद मौके पर तनाव हो गया। कुछ देर के लिए सड़क जाम हो गई। इस वजह से गाड़ियों को आने-जाने में दिक्कतों का सामना करना पड़ा। पुलिस के मौके पर पहुंचने और लोगों से बातचीत करने के बाद ट्रैफिक की समस्या हल हुई। दूसरी ओर, खबर है कि किलर इनोवा कार को पकड़ने के लिए पुलिस अलग-अलग चौराहों पर लगे CCTV चेक कर रही है।

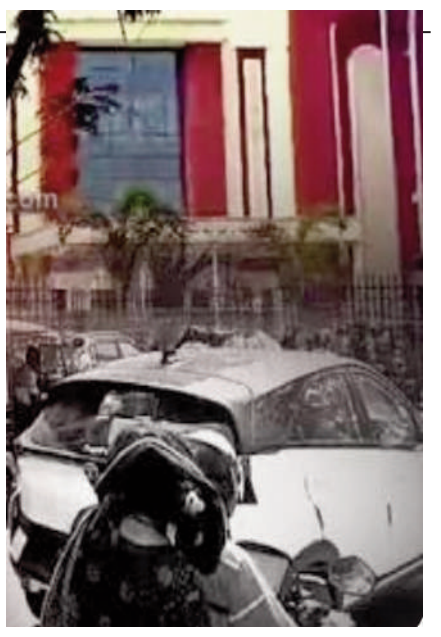

"आज से शुरू हुई दिल्ली जल बोर्ड की एक और नई योजना, समय रहते लाभ प्राप्त करे"

पिंकी कुंडू । घरेलू जल कनेक्शनों के साथ ही अब कॉमर्शियल वॉटर कनेक्शन्स पर लगे लेट पेमेंट सरचार्ज को दिल्ली जल बोर्ड अब 100% माफ़ कर रहा है। समय रहते बकाया बिल भुगतान करें, और सरचार्ज के पैसे बचाएं।

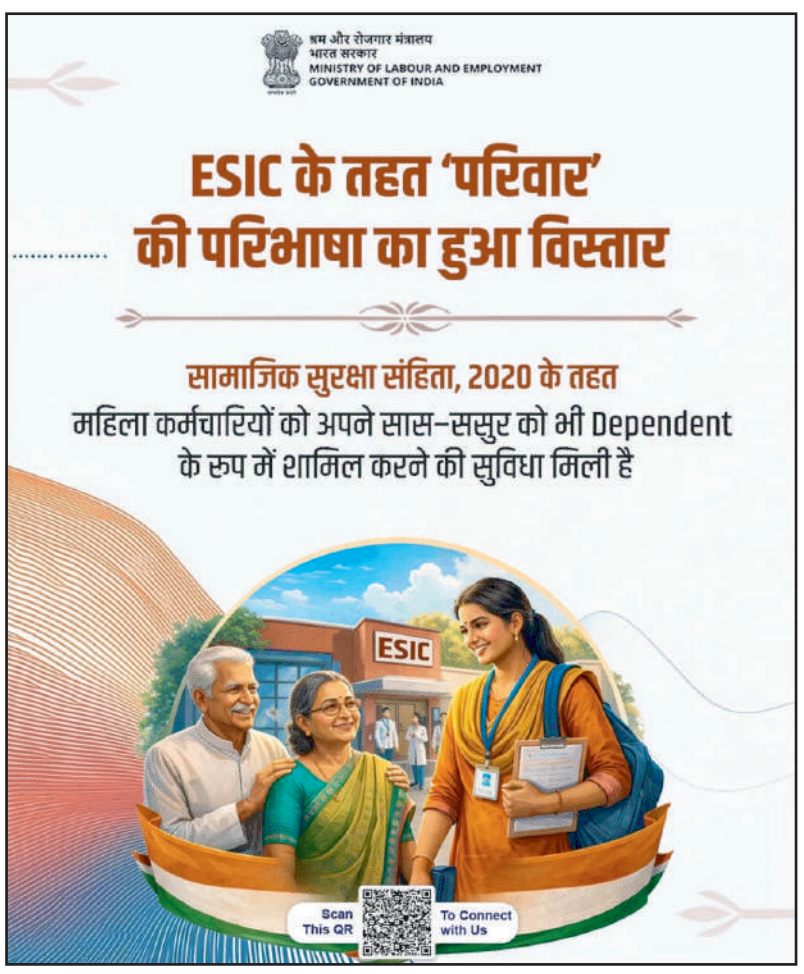

ईएसआईसी के तहत परिवार की नई परिभाषा, जाने

पिंकी कुंडू । सामाजिक सुरक्षा संहिता, 2020 के अंतर्गत अब महिला कर्मचारियों को अपने सास-ससुर को भी आश्रित के रूप में शामिल करने की सुविधा प्रदान की गई है। इससे सामाजिक सुरक्षा का दायरा और विस्तृत हुआ है तथा परिवारों को अतिरिक्त संरक्षण मिला है।

"क्या आप भी नौकरी की तलाश में हैं?"

पिंकी कुंडू । नेशनल करियर सर्विस (NCS) पोर्टल पर पंजीकरण, नौकरी के लिए आवेदन, साक्षात्कार प्रक्रिया तथा रोजगार से जुड़ी सभी सेवाएँ पूरी तरह नि:शुल्क उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी के लिए www.ncs.gov.in पर विजिट करें।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com (इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। **RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023**